ISSN 0974 1666

सी.सी.आर.यू.एम

न्यूज़लेटर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद की द्वैमासिक पत्रिका

खंड 36 • अंक 1–2 जनवरी–अप्रैल 2016

हकीम अजमल ख़ाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

हकीम अजमल ख़ाँ की वसीयत–संपदा को आगे बढ़ाने की आवश्यकता पर बल

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद के हकीम अजमल ख़ाँ साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान ने 12–13 फरवरी को नई दिल्ली में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सहयोग से हकीम अजमल ख़ाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी में हकीम अजमल ख़ाँ के जीवन के विभिन्न पहलुओं, उनके योगदान, देसी चिकित्सा पद्धतियों में शोध व विकास और एकता में अनेकता व देशभक्ति की उनकी वसीयत–संपदा को आगे बढ़ाने की आवश्यकता को उजागर किया गया। यह भी माँग की गई कि हकीम साहिब के योगदान को देखते हुए उन्हें भारत–रत्न प्रदान किया जाए और यूनानी चिकित्सा पद्धति की एक यूनिवर्सिटी स्थापित की जाए।

संगोष्ठी में उद्घाटन व समापन सत्रों के अतिरिक्त कुल छः तकनीकी सत्र शामिल किए गए। दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान हकीम अजमल खाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर 50 से अधिक पत्र प्रस्तुत किए गए।

डॉ. नजमा हेप्तुल्ला, माननीय केन्द्रीय मंत्री, अल्पसंख्यक कार्य अन्य गणमान्य व्यक्तियों के साथ 12 फरवरी को जामिया मिल्लिया इस्लामिया में हकीम अजमल खाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह में संगोष्ठी की सारांश स्मारिका का विमोचन करती हुई।

इस अवसर पर परिषद के महत्वपूर्ण प्रकाशनों का विमोचन किया गया और यूनानी चिकित्सा से जुड़े अनेक विद्वानों को उनके योगदान के लिए लाइफ़ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड और अप्रीसिएशन अवार्ड प्रदान किए गए।

उद्घाटन सत्र

संगोष्ठी का उद्घाटन डॉ. नजमा हेप्तुल्ला, माननीय केन्द्रीय मंत्री, अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने कहा कि हकीम अजमल खाँ अनेकता में एकता और साम्प्रदायिक सदभाव के ऐसे राजदूत थे कि कोई उनके चरित्र, विश्वसनीयता और नियत पर शक नहीं कर सकता था और इसीलिए एक तरफ उन्होंने मुस्लिम लीग के सत्रों की अध्यक्षता की तो दूसरी तरफ हिन्दू महासभा के सत्रों की। उन्होंने कहा कि हकीम साहिब ने हमारे स्वदेशी ज्ञान विज्ञान के प्रोत्साहन और विकास की एक संपदा छोड़ी है जिसे आगे बढ़ाने की ज़रूरत है। यह हकीम साहिब के प्रति एक महान श्रद्धांजलि होगी कि हम आज की आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी स्वदेशी चिकित्सा पद्धति का अद्यतन करें और वैज्ञानिक व आवश्यकता अनुकूलन शोध द्वारा उनके तिब्बी मिशन को आगे बढ़ाएं। उन्होंने स्कूल पाठ्यक्रम में हिकमत को शामिल करने की वकालत भी की।

प्रो. तलत अहमद, उप–कुलपति, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने कहा कि हकीम अजमल ख़ाँ एक चहुँमुखी व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी थे जिन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया और अन्य शिक्षण संस्थानों की स्थापना और विकास में एक अहम योगदान दिया। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि जामिया और के.यू.चि.अ.प. को ऐसे क्षेत्रों में संयुक्त अनुसंधान शुरू करना चाहिए जहाँ दोनों संस्थान मार्गदर्शक के तौर पर खुद को स्थापित कर सकें। उन्होंने आगे कहा कि यह जामिया के लिए गर्व की बात है कि हकीम साहिब की 148 वीं जयन्ती पर आयोजित गोष्ठी में के.यू.चि.अ.प. के साथ भागीदारी की।

इस अवसर पर बोलते हुए, डॉ. जी. एन. क़ाज़ी, उप–कुलपति, जामिया हमदर्द ने कहा कि हकीम अजमल ख़ाँ यूनानी चिकित्सा के अग्रणी लोगों में से एक थे। उन्होंने, वास्तव में, भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में प्रयोग होने वाली विभिन्न औषधियों के रासायनिक घटकों के संदर्भ में इस युग के वैज्ञानिकों के लिए एक महान पथ की नींव रखी। वह केवल एक हकीम और स्वाधीनता सेनानी ही नहीं बल्कि एक महान संस्थान निर्माता थे और उनके अनेक कार्य जो उनके जीवन काल में पूरे न हो सके उन्हें हकीम अब्दुल हमीद ने पूर्ण किया।

प्रो. अल्ताफ़ अहमद आज़मी ने अपने मुख्य भाषण में बताया कि हकीम अजमल ख़ाँ एक महान चिकित्सक के अतिरिक्त अरबी व फ़ारसी साहित्य के एक प्रख्यात विद्वान एवं लेखक थे। उन्होंने भारतीय मुस्लिम समाज की शैक्षणिक प्रगति और यूनानी चिकित्सा के उत्थान में एक अहम

डॉ. नजमा हेप्तुल्ला, माननीय केन्द्रीय मंत्री, अल्पसंख्यक कार्य 12 फरवरी को नई दिल्ली में हकीम अजमल खाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन समारोह को संबोधित करती हुईं।

योगदान दिया।

प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के अनुसंधान एवं विकास, देशभक्ति व सामाजिक एकता के संदर्भ में हकीम अजमल ख़ाँ की विरासत–संपदा को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हकीम अजमल ख़ाँ के कार्यों को उचित सम्मान व स्वीकृति नहीं प्राप्त हो सकी और उन्होंने भारत सरकार से उनको भारत रत्न से सम्मानित करने का आग्रह किया। उन्होंने बताया कि हकीम साहिब के आयुर्वेद और यूनानी चिकित्सा को एक साथ लाने के विचार से ही भारत सरकार विभिन्न स्वदेशी चिकित्सा पद्धतियों को आयुष के अर्न्तगत ला सकी। उन्होंने कहा कि के.यू.चि.अ.प. प्रारम्भ से ही, औषधीय पादपों का सर्वेक्षण एवं कृषि, औषधीय मानकीकरण, नैदानिक अनुसंधान और यूनानी चिकित्सा में साहित्यिक अनुसंधानिक क्षेत्रों में शोध के लिए सुनियोजित एवं गम्भीर प्रयास कर रही है।

इस अवसर पर गणमान्य अतिथियों ने संगोष्ठी की सारांश स्मारिका, हकीम मज़हर सुबहान उस्मानी पर के.यू.चि.अ.प. की उर्दू वैज्ञानिक पत्रिका जहान–ए–तिब्ब का विशेष संस्करण और अन्य तीन प्रकाशनों का विमोचन किया। डॉ. मो. फ़ज़ील, अनुसंधान अधिकारी प्रभारी और डॉ. फख़्रे आलम, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), हकीम अजमल खाँ साहित्यिक एवं एतिहासिक यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान द्वारा एक विशेष पुस्तक 'निशान–ए–अजमल' का भी विमोचन किया।

प्रो. अब्दुल हक, डॉ. वसीम अहमद आज़मी, डॉ. के.ए.एस. आज़मी, डॉ. अहमद सईद और डॉ. उसामा अकरम 12–13 फरवरी को नई दिल्ली में हकीम अजमल खाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के एक तकनीकी सत्र के दौरान।

के.यू.चि.अ.प. ने हकीम मज़हर सुबहान उस्मानी और प्रो. इश्तियाक़ अहमद द्वारा यूनानी चिकित्सा में किए गए सहयोग को देखते हुए उन्हें मरणोपरांत लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया। प्रो. अब्दुल जब्बर खान को भी लाइफ़टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान किया गया जबकि हकीम खुरशीद अहमद शफ़क़त आज़मी, हकीम वसीम अहमद आज़मी और डॉ. शारिक़ अली ख़ान भी अप्रीशिएशॅन अवार्ड से सम्मानित किए गए। उद्घाटन सत्र संगोष्ठी के आयोजक सचिव डॉ. मो. फ़ज़ील के धन्यवाद ज्ञापन से सम्पन्न हुआ।

तकनीकी सत्र

छः तकनीकी सत्रों में से प्रथम सत्र ''हकीम अजमल ख़ां : एक सफ़ल चिकित्सक और यूनानी चिकित्सा में अनुसंधान और शिक्षा के आदर्श वास्तुकार'' विषय पर आधारित था। सत्र की मुख्य विशेषता प्रो. के.एम.वाई. अमीन का ''अजमल खान का संदृश्य : यूनानी चिकित्सा के परम्परागत मूल्यों का

नई दिल्ली में 12–13 फरवरी को हकीम अजमल खाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के एक तकनीकी सत्र के दौरान श्रोतागण का एक दृश्य।

डॉ. खालिद एम. सिद्दीकी, प्रो. रईस–उर–रहमान, डॉ. उम्मुल. फज़ल, श्री मेहर–ए–आलम ख़ान, डॉ. मोहम्मद ख़ालिद सिद्दीकी, डॉ. सगीर ए. सिद्दीकी, डॉ. राशिदुल्लाह खॉन और डॉ. मोहम्मद फज़ील 12–13 फरवरी को नई दिल्ली में हकीम अजमल खाँ के बहुमुखी व्यक्तित्व एवं योगदान पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन पर ग्रुप फोटो के लिए पोज़ देते हुए।

प्रतिधारण और सदृढ़ीकरण'' शीर्षक पर आंमत्रित व्याख्यान था। इसके अतिरिक्त, प्रो. अनीस अहमद अंसारी, प्रो. अब्दुल वदूद और डॉ. गुलामुददीन सोफ़ी ने भी संगोष्ठी के विषय पर अपने लेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र 'हकीम अजमल ख़ाँ लेखक और कवि के रूप में' विषय पर आधारित था, जबकि तृतीय सत्र उनके भाषण और उनके द्वारा प्रशिक्षित यूनानी विद्वानों का सहयोग से सम्बंधित था। प्रत्येक सत्र में पाँच लेख और एक आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किए गए। चतुर्थ सत्र यूनानी चिकित्सा की प्रगति में हकीम अजमल ख़ाँ के परिवार – खानदान शरीफ़ी का सहयोग और पंचम सत्र भारत के स्वाधीनता संग्राम में हकीम साहिब की भूमिका और राजनीतिक विवेक को समर्पित था। छठा सत्र एक शिक्षाविद के तौर पर हकीम साहिब के सहयोग से सम्बंधित था। कुल मिलाकर छः तकनीकी सत्रों में 50 से अधिक लेख प्रस्तुत किए गए, इसके अतिरक्त प्रत्येक सत्र में एक आमंत्रित लेख भी प्रस्तुत किया गया।

समापन सत्र

समापन सत्र में के.यू.चि.अ.प. की पूर्व निदेशक डॉ. उम्मुल फ़ज़ल मुख्य अतिथि थीं। मंच पर आसीन अन्य गणमान्य व्यक्तियों में परिषद के पूर्व महानिदेशक डॉ. मोहम्मद ख़ालिद सिददीक़ी व प्रो. सैयद शाकिर जमील, प्रो. रईस–उर–रहमान, सलाहकार (यूनानी) एवं महानिदेशक, के.यू.चि. अ.प., डॉ. ख़ालिद महमूद सिददीक़ी, उप–महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प., डॉ. राशिदुल्लाह ख़ान, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद् और डॉ. सग़ीर अहमद सिददीक़ी, नोडल ऑफिसर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया थे।

सत्र के आरंभ में प्रो. रईस–उर–रहमान ने संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्रस्तुत लेखों के मुख्य बिन्दुओं पर प्रकाश डाला और हकीम अजमल ख़ाँ की ज़िन्दगी और सहयोग के विभिन्न पहलुओं पर वक्ताओं की महत्त्पवूर्ण प्रस्तुति को सराहा। उन्होंने के.यू.चि. अ.प. के पूर्व निदेशक हकीम अब्दुल रज़्जाक सहित अन्य पूर्व सहयोगियों की सेवाओं का स्मरण किया। उन्होंने यूनानी चिकित्सा पद्धति के अनुसंधान और विकास की गति पर अपनी चिंता जताई और सभी सहयोगियों से पूर्ण ईमानदारी व लगन से अपना कर्त्तव्य निर्वाह करने की विनती की।

डॉ. राशिदुल्लाह ख़ान ने इस अर्थपूर्ण संगोष्ठी के लिए आयोजकों को बधाई दी और विभिन्न संस्थानों में शिक्षा के स्तर को उन्नत बनाने हेतु केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद द्वारा उठाए गए क़दमों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया।

डॉ. मोहम्मद ख़ालिद सिददीक़ी, पूर्व महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने पूर्व शताब्दी में किए गए शोध कार्य और परिषद की उपलब्धियों की चर्चा की और यूनानी चिकित्सा के उत्तम भविष्य की कामना की और इस महान कृत्य के लिए पूर्ण समर्पण की भावना पर बल दिया।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. उम्मुल फ़ज़ल ने परिषद के बाल्यकाल में इसके तत्कालीन निदेशक द्वारा किए गए प्रयासों की चर्चा की और यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास एवं प्रसार हेतु 1987 में आयोजित अर्न्तराष्ट्रीय संगोष्ठी का विशेष तौर पर ज़िक्र किया।

सत्र के समापन पर डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी ने मुख्य अतिथि, गणमान्य व्यक्तियों, प्रतिभागियों, मीडियाकर्मी और परिषद स्टाफ का संगोष्ठी की सफलता पर आभार प्रकट किया।

• *नियाज़*

क्षे.यू.चि.अ.सं. मुम्बई के भवन का शिलान्यास

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने 28 दिसम्बर को खारघर, नवी मुम्बई में केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, मुम्बई और केन्द्रीय होम्योपैथी अनुसंधान परिषद (के.हो.अ.प.) के क्षेत्रीय होम्योपैथी अनुसंधान संस्थान के संयुक्त भवन का शिलान्यास किया।

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय 28 दिसम्बर 2015 को खारघर, नवी मुम्बई में यूनानी और होम्योपैथी चिकित्सा के क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान के भवन के शिलान्यास हेतु प्लाक से परदा उठाते हुए। साथ में प्रा. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. और डॉ. राज के. मनचन्दा, महानिदेशक, के.हो.अ.प. भी देखे जा सकते हैं।

शिलान्यास समारोह को सम्बोधित करते हुए, श्री श्रीपाद नाईक ने कहा कि आयुष पद्धतियों के विकास एवं स्वास्थ्य रक्षा क्षेत्र में उनके सदुपयोग हेतु इन पद्धतियों में उच्च स्तर का अनुसंधान आवश्यक है। उन्होंने कहा कि गैर संक्रामक रोग विश्व स्तर पर एक बड़ी समस्या बने हुए हैं जिनसे निपटने के लिए आयुष चिकित्सा पद्धतियों की क्षमता का प्रयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने इस बात को दोहराया कि भारत सरकार आयुष चिकित्सा के शोध संस्थानों व आधारभूत संरचना को मज़बूत करने के लिए कृत संकल्प है। उन्होंने महाराष्ट्र सरकार से राज्य के आयुष कॉलिजों हेतु केन्द्रीय प्रायोजित योजनाओं से लाभान्वित होने का आग्रह किया।

डॉ. कुलदीप राज कोहली, निदेशक, आयुष, महाराष्ट्र सरकार ने कहा कि राज्य सरकार आयुष संस्थानों, चिकित्सालयों और कॉलिजों के विकास हेतु कटिबद्ध है। उन्होंने सुझाव दिया कि भवन निर्माण कार्य पूरा होने पर यूनानी और होम्योपैथी संस्थानों को अपनी चिकित्सा पद्धति में स्नात्तकोत्तर शिक्षा आरम्भ करनी चाहिए।

श्री प्रशान्त ठाकुर, सदस्य, महाराष्ट्र विधान सभा ने संस्थानों की स्थापना हेतु खारघर जनपद को चुनने की सराहना की जिससे जनपद का जनजातीय समुदाय आयुष चिकित्सा की स्वास्थ्य सेवाओं से लाभान्वित होगा।

इस अवसर पर बोलते हुए डॉ. अरुण भस्मे, उपाध्यक्ष, केन्द्रीय होम्योपैथी परिषद ने राज्य में आयुष मूलभूत संरचना के विकास की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि यह कार्य राज्य सरकार की सक्रिय संलग्नता से आयुष मंत्रालय की छत्रछाया में हो सकता है।

इससे पूर्व, प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. और डॉ. राज के. मनचंदा, महानिदेशक, के.हो.अ.प. ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया और आयुष बिरादरी को नवीन शोध परियोजनाओं पर कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ होम्योपैथी व यूनानी अनुसंधानकर्त्ताओं और राज्य भर के चिकित्सकों व होम्योपैथी व यूनानी शिक्षा संस्थानों के छात्रों ने भाग लिया।

• *नियाज़*

के.यू.चि.अ.प. द्वारा शासीनिकाय सदस्यों का अभिनंदन

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने 10 अप्रैल 2016 को अपने मुख्यालय में शासी निकाय के नए नामित अशासकीय सदस्यों के लिए एक स्वागत बैठक का आयोजन किया। बैठक का उद्देश्य सदस्यों को परिषद की अनुसंधानिक गतिविधियों और कार्यों से अवगत कराना था। पूर्व शासी निकाय के कार्यकाल की समाप्ति के बाद नवीन शासी निकाय का गठन किया गया है जिसे 14 मार्च 2016 को अधिसूचित किया गया।

परिषद् मुख्यालय में 10 अप्रैल को परिषद के शासी निकाय के नए नामित अशासकीय सदस्यों के स्वागत हेतु आयोजित बैठक का एक दृश्य।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रो. ए. रे, वल्लभभाई पटेल चेस्ट इन्स्टीट्यूट ने कहा कि आधुनिक चिकित्सा के विपरीत परम्परागत चिकित्सा में अवांति प्रभाव नहीं हैं, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इन चिकित्सा पद्धतियों का आवश्यक प्रचार प्रसार न होने के कारण आधुनिक चिकित्सा पद्धति केन्द्रीय स्तर पर विद्यमान है। उन्होंने कहा कि परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों की प्रसिद्धि के लिए वैद्यीकरण और मानकीकरण कार्य अति आवश्यक हैं। उन्होंने यह भी सलाह दी कि आयुष पद्धति के शोधनकर्त्ताओं को आधुनिक चिकित्सा जगत से जुड़े लोगों से परस्पर विचार–विनिमय करना चाहिए जिससे दोनों को लाभ होगा।

इस अवसर पर डॉ. रामेश्वर दयाल, पूर्व वैज्ञानिक एफ़ व अध्यक्ष, रसायन मंडल, वन अनुसंधान संस्थान ने औषधीय पादपों से सम्बन्धित लोक दावों को वैधीकृत करने की आवश्यकता पर बल दिया। डॉ. सिराजुददीन अहमद ने परिषद के शोध कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि वर्तमान समय में भारतीय चिकित्सा पद्धतियों को अपनाया जाना एक अच्छा संकेत है। उन्होंने सुझाव दिया कि एम.डी. थीसिस के संक्षिप्त रूप का प्रकाशन वैज्ञानिक समुदाय के हित में होगा। डॉ. वीना गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक, नेशनल ब्युरो ऑफ़ प्लांटस जैनेटिक रिसोर्सेज़ ने स्थानीय औषधीय पौधों के अनुसंधान को बढ़ाने की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. हसीबुन्निसा ने परिषद की गतिविधियों व सफलताओं को प्रचारित करने की बात कही। डॉ. एम. ए. वहीद, पूर्व प्रभारी उप निदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने गुणवत्ता अनुसंधान द्वारा यूनानी चिकित्सा के वैश्वीकरण के कार्य की आवश्यकता उजागर की और कहा कि शोधकर्त्ताओं को उनका शोध कार्य प्रकाशित करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। डॉ. तस्लीम बानो ने सुझाव दिया कि यूनानी चिकित्सकों को, इस पद्धति के हित में, केवल यूनानी चिकित्सा में प्रैक्टिस करने के लिए प्रेरित करना आवश्यक है। डॉ. मदन सिंह जाखड़ ने सुझाव दिया कि के.यू.चि.अ.प. को फ़रीदाबाद/मेवात में भी अपना एक शोध केन्द्र स्थापित करना चाहिए। हकीम खुरशीद मुराद सिद्दीक़, उपाध्यक्ष (तकनीकी) और प्रो. गोविंद के. मरवारिया, आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञ बैठक में शामिल नहीं हो सके।

इससे पूर्व, अपने परिचायक भाषण में प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने शासी निकाय के सभी सदस्यों का स्वागत किया और उन्हें परिषद् के शोध प्रयासों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि भारतवर्ष में यूनानी चिकित्सा में शोध कार्य शुरू

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सचिव (आयुष) का क्षे.यू.चि.अ.सं. श्रीनगर दौरा

श्री अजीत एम. शरण, सचिव (आयुष), भारत सरकार ने 12 अप्रैल को के.यू.चि.अ.प. के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, श्रीनगर का दौरा किया। श्री शरण ने के.यू.चि.अ.प. के महानिदेशक प्रो. रईस–उर–रहमान के साथ, संस्थान के विभिन्न यूनिट्स को देखा और उनकी कार्यशैली के बारे में जानकारी ली।

श्री अजीत एम. शरण, सचिव (आयुष), भारत सरकार और प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक के.यू.चि.अ.प. 12 अप्रैल को क्षे.यू.चि.अ.सं. के टाक्सिकॉलाजी प्रयोगशालय का दौरा करते हुए।

अपने दौरे के दौरान, श्री शरण ने डॉ. सीमा अकबर, प्रभारी अनुसंधान अधिकारी और अन्य पदाधिकारियों से विस्तृत चर्चा की। उन्हें संस्थान द्वारा शोध क्षेत्र की उपलब्धियों से अवगत कराया गया। श्री शरण को संस्थान के पादप उद्यान में कुछ विलुप्त हो रहे यूनानी औषधीय पौधों के सफ़ल उत्पादन की कृषि तकनीकों से भी अवगत कराया गया। वह विज्ञान एवं तकनीक विभाग, भारत सरकार के सहयोग से विकसित टाक्सिकॉलाजी यूनिट की आधारभूत संरचना से प्रभावित हुए।

संस्थान की आधारभूत संरचना और विशेषताओं से अभिभूत श्री शरण ने संस्थान को केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान में प्रोन्नत करने और एम.डी. (यूनानी) और संबद्ध विषयों में एम.फिल./पी.एच.डी. डिग्री देने हेतु मान्यता प्राप्त करने के लिए प्रयास करने का परामर्श दिया। उन्होंने कश्मीर यूनिवर्सिटी के विभिन्न संकायों के साथ सहयोगात्मक अनुसंधान करने की सलाह भी दी।

• *नियाज़*

(पृष्ठ 6 का शेष)

करने का श्रेय हकीम अजमल ख़ाँ को है जिनके प्रयासों से भारत सरकार का ध्यान परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के विकास व उन्नति की ओर हुआ और इसके परिणामस्वरूप के.यू.चि.अ.प. और इसके समतुल्य संथानों की स्थापना हुई। उन्होंने बताया कि परिषद ने अपने अनुसंधान में यूनानी चिकित्सा के कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे चर्म रोग, संधि रोग और यकृत रोग में महत्वपूर्ण कार्य कर नेतृत्व हासिल किया है और परिषद् आने वाले वर्षों में ग़ैर संक्रामक रोग, जीवनशैली संबंधित रोग व अन्य रोगों में शोध गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करेगी। उन्होंने कहा कि परिषद् गोवा, भोपाल और आंध्र प्रदेश में अनुसंधान संस्थान स्थापित करने की योजना पर कार्य कर रही है।

डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप–महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने पावर पॉइंट प्रिज़ेन्टेशन द्वारा अतिथियों को परिषद की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, सांस्थानिक तंत्र, अनुसंधानिक कार्यक्रम, गतिविधियों और उपलब्धियों, नवीन विकास व परिषद द्वारा उठाए गए क़दमों की जानकारी दी।

बैठक का समापन डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। इस बैठक में के.यू.चि.अ.प. मुख्यालय के सभी अनुसंधान अधिकारी सम्मिलित हुए।

• *नियाज़*

हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ स्मरण व्याख्यान

हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ एक महान व्यक्ति थे जिन्होंने अपना पूरा जीवन यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुमुखी विकास और उन्नति के लिए समर्पित कर दिया और आज इसके और अधिक विकास हेतु एक और एम.ए. रज़्ज़ाक़ की ज़रूरत है, यह शब्द प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने 8 अप्रैल को जामिया हमदर्द नई दिल्ली में परिषद् द्वारा अपने संस्थापक निदेशक की वर्षगांठ मनाने हेतु आयोजित हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ स्मरण व्याख्यान में कहे।

श्री सुहैल रज़्ज़ाक़ 8 अप्रैल को जामिया हमदर्द, नई दिल्ली में आयोजित हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ स्मरण व्याख्यान को संबधित करते हुए। मंच पर बैठे गणमानीय व्यक्ति डॉ. खालिद एम. सिद्दीक़ी, डॉ. उम्मुल फज़ल, प्रो. तलत अहमद, प्रो. रईस–उर–रहमान और डॉ. मुश्ताक़ अहमद हैं।

प्रो. रईस–उर–रहमान ने कहा कि हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ ने अपने छोटे से जीवन काल में यूनानी चिकित्सा के विकास और संगठन क्षेत्र में जो कुछ किया वह एक पूरी पीढ़ी द्वारा नहीं किया जा सकता। उन्होंने यूनानी चिकित्सा पद्धति की एक अलग अनुसंधान परिषद की स्थापना को उनकी महान उपलब्धियों में से एक बताया।

इस आयोजन के मुख्य अतिथि प्रो. तलत अहमद, उप–कुलपति, जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने कहा कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के दृष्टिकोण से यूनानी चिकित्सा, एक चिकित्सा विज्ञान होने के अतिरिक्त, एतिहासिक व सांस्कृतिक महत्त्व भी रखती है। उन्होंने आगे कहा कि जामिया एक यूनानी मेडिकल कॉलिज और एक मॉडर्न मेडिकल कॉलिज स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। जामिया और के.यू.चि.अ.प. के मध्य एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यूनानी चिकित्सा में अंतरविभागीय अनुसंधान के लिए वह हर सम्भव सहायता देने को तैयार हैं और उन्होंने आग्रह किया कि दोनो संस्थानों को इस क्षेत्र में नेतृत्व करने के लिए सामूहिक रूप से कार्य करना चाहिए।

अपने विस्तृत व्याख्यान के दौरान, डॉ. मुश्ताक़ अहमद, पूर्व निदेशक, केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद ने कहा कि हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ ने यूनानी चिकित्सा के प्रति इतने सेवा समर्पित थे कि एक ओर वह के.यू.चि.अ.प. के निदेशक थे और इसके साथ–साथ दूसरी ओर वह ऑल इन्डिया तिब्बी कांफ्रेंस से भी जुड़े हुए थे।

इस अवसर पर बोलते हुए, हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ के सुपुत्र श्री सुहैल रज़्ज़ाक़ ने कहा कि उनके पिता यूनानी चिकित्सा के विकास के प्रति एक दृष्टिकोण रखते थे और उन्होंने अपना पूरा जीवन इस सोच के पूरा करने में समर्पित कर दिया। वह सोचते थे कि यूनानी चिकित्सा को वैज्ञानिक बिरादरी द्वारा पूर्णतयाः स्वीकार करने के लिए आधुनिकीकृत करने की आवश्यकता है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, डॉ. उम्मुल फ़ज़ल, पूर्व निदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने विदेशों में यूनानी चिकित्सा के विकास हेतु हकीम एम.ए. रज़्ज़ाक़ के प्रयासों का ज़िक्र किया। उन्होंने शोधकर्त्ताओं और चिकित्सकों से आग्रह किया कि वे यूनानी चिकित्सा के प्रति अपनी मेहनत व कोशिशों को भारतवर्ष तक ही सीमित न रखें बल्कि इसको विदेशों में भी फैलाएं।

अंत में डॉ. खालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों, शोधकर्त्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों और छात्रों का शुक्रिया अदा किया। ■

पारंपरिक चिकित्सा पर भारत–अमेरिका कार्यशाला

आयुष चिकित्सा में शोध पर भारत व अमेरिका में सहयोग

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार एवं अमेरिकी सरकार ने 3 से 4 मार्च को नई दिल्ली में एक दो दिवसीय भारत–अमेरिका परम्परागत चिकित्सा कार्यशाला का आयोजन किया। सितम्बर 2015 में वाशिंगटन, डी. सी. में हुए प्रथम भारत–अमेरिका स्वास्थ्य संवाद के तत्वाधान में आयोजित इस कार्यशाला का उद्देश्य कैन्सर की रोकथाम और उपशामक चिकित्सा हेतु परम्परागत चिकित्सा के विकास और शोध पर सहयोग करना था।

माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (आयुष) श्री श्रीपाद येस्सो नाईक एवं अन्य गणमानीय व्यक्ति 3–4 मार्च को नई दिल्ली में आयोजित पारंपरिक चिकित्सा पर भारत–अमेरिका कार्यशाला के दौरान मंच पर बैठे हुए।

यू.एस. डिपार्टमेंट ऑफ़ हैल्थ एन्ड हयुमन सर्विसिज़ (एच.एच.एस.), ऑफिस ऑफ़ ग्लोबल अफेयर्स (ओ.जी.ए.), नेश्नल कैंसर इन्स्टिट्यूटस आफ़ हैल्थ (एन.आई.एच.), नेश्नल कैंसर इन्स्टिट्यूट (एन.सी.आई.) और अमेरिकी शैक्षिक संस्थानों के प्रतिनिधियों ने कार्यशाला में भाग लिया। भारत की ओर से पारंपरिक चिकित्सा के विद्वानों, आयुष पद्धतियों के हितधारकों तथा प्रमुख अनुसंधानिक एवं नैदानिक संस्थानों के वैज्ञानिकों ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

विचार विमर्श के दौरान विभिन्न रोगावस्था के उपचार में आयुष पद्धतियों की सामर्थ्यता का प्रदर्शन किया गया। परिचर्चा का मुख्य बिंदु कैंसर की रोकथाम और उपचार में आयुष चिकित्सा की भूमिका रही।

दोनों पक्ष आयुष उत्पादों के मानकीकरण और गुणवत्ता सुधार में सहयोग पर सैद्धान्तिक रूप से सहमत हुए। धारणीय आधार पर परामर्श प्रक्रिया और आपसी जानकारी को आगे बढ़ाने के लिए दोनों पक्षों पर आधारित एक संयुक्त कार्य समूह बनाने पर भी सैद्धान्तिक रूप से सहमति हुई। आयुष मंत्रालय और यू.एस.एच.एस. विभाग के मध्य शीघ्र ही एक समझौता होने की आशा भी है। भारत एवं अमेरिका के मध्य एक सुनिश्चित समझौते के अतिरिक्त, आयुष मंत्रालय ने विभिन्न सहयोगकर्त्ताओं व वैज्ञानिक संस्थानों को भी चिन्हित किया है जिनके साथ कैंसर उपचार में आयुष को मुख्यधारा में लाने की योजना पर कार्य करना है। आयुष मंत्रालय इस उद्देश्य के लिए विशेषज्ञों और चिकित्सकों की सुविज्ञता लेने के लिए एक विशेष मंच तैयार करेगा।

(शेष पृष्ठ 19 पर)

के.यू.चि.अ.प. पुस्तकालयों का डाटा अब एन.आई.सी. पटल पर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् ने 18 अप्रैल को नई दिल्ली में एक शुभारम्भ समारोह आयोजित कर एन.आई.सी. पटल पर अपने पुस्तकालयों का डाटा लांच किया। इस सूत्रपात ने परिषद् के विभिन्न संस्थानों के 10 पुस्तकालयों का डाटा विश्व स्तर पर प्राप्त करना सम्भव बना दिया है। यह कार्य नेश्नल इन्फ़ार्मेटिक्स सेन्टर (एन.आई.सी.) के इन्टीग्रेटिड लाइब्रेरी मैनेजमेन्ट सॉफ्टवेयर *ई–ग्रन्थालय* द्वारा किया गया।

प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. 18 अप्रैल को नई दिल्ली में परिषद पुस्तकालयों का डाटा एन.आई.सी. के पटल पर लांच करते हुए। चित्र में डॉ. ख़ालिद एम. सिद्दीक़ी, उप–महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. भी देखे जा सकते हैं।

प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने एन.आई.सी. पटल पर परिषद पुस्तकालयों का डाटा लांच करने के बाद एन.आई.सी. के द्वारा परिषद के पुस्तकालयों के नेटवर्किंग तथा स्वचलीकरण को शोधकर्ताओं के लिए एक हथियार बताया। इसके महत्त्व को उजागर करते हुए उन्होंने कहा कि सुविधा सम्पन्न पुस्तकालय शोध के लिए अति आवश्यक है। उन्होंने *ई–ग्रन्थालय* द्वारा परिषद पुस्तकालयों का डाटा विकसित करने और उसे एन.आई.सी. पटल पर डालने में दिए गए सहयोग के लिए डॉ. मटोरिया, तकनीकी निदेशक, एन.आई.सी. और उनकी टीम का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर डॉ. आर.के. मटोरिया ने कहा कि अनुसंधानिक गतिविधियों में पुस्तकालयों का एक अहम योगदान है और इसलिए इनको उन्नत तकनीक और नवीनतम सुविधाओं से सम्पन्न होना चाहिए। उन्होंने आयुष मंत्रालय के अधीन अन्य अनुसंधान परिषदों से *ई–ग्रन्थालय* को अपनाने का आहवान किया ताकि शोधकर्त्ता इसका भरपूर उपयोग कर सकें।

इससे पूर्व डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने अपने परिचायक व स्वागत सम्बोधन में अनुसंधानिक गतिविधियों में पुस्तकालय सुविधाओं के महत्त्व पर प्रकाश डाला और परिषद् पुस्तकालयों में अपार साहित्यिक सम्पदा की मौजूदगी पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने इस नए कदम के लिए परिषद के पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र के स्टाफ की कोशिशों की प्रशंसा की।

डॉ. ज़कीउद्दीन, सहायक निदेशक (यूनानी), के.यू.चि.अ.प. ने कहा कि इस प्रयास से शोधकर्त्ताओं को किताबें खोजने में आसानी होगी और समय की बचत होगी।

इस कार्यक्रम का समापन श्री मो. अज़हर ख़ान, सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी, के.यू.चि.अ.प. के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। ■

"अगर हम हर व्यक्ति को सही मात्रा में पोषण और व्यायाम दे पाते, ना तो बहुत कम, ना बहुत ज़्यादा, तो हमें स्वास्थ्य का सबसे सुरक्षित रास्ता मिल जाता।"

– हिप्पोक्रेट्स (सी. 460 ई.पु. – सी. 377 ई.पु.)

क्षे.यू.चि.अ.सं. पटना द्वारा तकनीकी राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

परिषद् के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (क्षे.यू.चि.अ.सं.), पटना में 30 मार्च को एक दिवसीय तकनीकी राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मेलन का उद्देश्य संस्थान कर्मचारियों को राजभाषा प्रावधान के महत्त्व की जानकारी देना और प्रतिदिन कार्यों में राजभाषा के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करना था।

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पटना द्वारा 30 मार्च को आयोजित तकनीकी राजभाषा सम्मेलन के उद्घाटन समारोह के दौरान मंच का एक दृश्य।

अपने उद्घाटन भाषण में डॉ. एस. सिकन्दर अली ख़ान, पूर्व अनुसंधान अधिकारी प्रभारी, क्षे.यू.चि.अ.सं. ने दिन प्रतिदिन के कार्यों में राजभाषा के प्रयोग और इसके प्रोत्साहन हेतु संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया।

डॉ. एम. शहबाज़ अहमद, सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पटना ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि संस्थान में राजभाषा सम्बन्धित काफी काम हुआ है और उन्होंने राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी नई तकनीकों को अपनाने का परामर्श दिया।

प्रो. अलाउद्दीन अहमद, पूर्व उपकुलपति, जामिया हमदर्द, नई दिल्ली ने 'मेक इन इण्डिया' कार्यक्रम को सफ़ल बनाने और जागरूकता पैदा करने में हिन्दी भाषा की सामर्थ्यता को रेखांकित किया। उन्होंने संस्थान के कर्मचारियों से राजभाषा के प्रसार के लिए अथक प्रयास करने को कहा।

डॉ. के.बी. अन्सारी, उपनिदेशक प्रभारी, क्षे.यू.चि.अ.सं., पटना ने देश के ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में स्वास्थ्य रक्षा क्षेत्र में यूनानी चिकित्सा के योगदान को उजागर किया। उन्होंने कहा कि यूनानी चिकित्सा पद्धति से जुड़े चिकित्सक देश के उन पिछड़े और दूरस्थ क्षेत्रों में मरीजों को स्वास्थ्य सेवा प्रदान करते हैं जहां आधुनिक चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध नहीं होती हैं। उन्होंने परिषद् द्वारा यूनानी चिकित्सा से सम्बंधित जानकारी को राजभाषा में प्रसारित करने में उठाए गए कदमों की जानकारी दी।

प्रथम तकनीकी सत्र में, डॉ. इश्तियाक आलम, डॉ. आयशा परवीन, डॉ. राजेश, श्री असलम सिददीक़ी, डॉ. तसलीम अहमद और डॉ. रिज़वानुल्लाह ने राष्ट्र के विकास में यूनानी चिकित्सा की भूमिका से सम्बन्धित लेख प्रस्तुत किए और के.यू.चि.अ.प. द्वारा किए गए शोध परिणामों पर प्रकाश डाला।

द्वितीय तकनीकी सत्र में, जो स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत कार्यक्रम में यूनानी चिकित्सा का योगदान विषय पर आधारित था, डॉ. मो. वसीम अहमद, डॉ. महबूब–उस–सलाम, डॉ. नजमुस्सहर, डॉ. मुमताज़ अहमद और डॉ. हश्मत इमाम द्वारा पाँच लेख प्रस्तुत किए गए।

समापन सत्र डॉ. एस. मंज़र अहसन, पूर्व उप–निदेशक, क्षे.यू.चि.अ.सं., पटना, प्रो. तौहीद किबरिया, गवर्नमेन्ट तिब्बिया कॉलिज, पटना, डॉ. देवानन्द प्रसाद सिंह, चिकित्सा अधीक्षक, गवर्नमेन्ट आयुर्वेदिक कॉलिज, पटना और डॉ. रिज़वानुल हक़, प्रमुख, सेन्टर फ़ॉर बायोलॉजिकल साइन्सेज़, सेन्ट्रल यूनीवर्सिटी ऑफ़ साउथ बिहार, पटना द्वारा सम्बोधित किया गया।

इसके अतिरिक्त एक काव्य पाठ कार्यक्रम शाम में आयोजित किया गया जिसमें अतिथियों एवं संस्थान कर्मचारियों ने हिन्दी कविता पाठ किया।

• *रिपोर्टः नियाज़ | इनपुटः वसीम*

वानस्पतिक नामावली पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भागीदारी

औषधीय पादप सर्वेक्षण एवं कृषि कार्यक्रम में संलग्न परिषद के तीन अनुसंधानकर्ताओं ने 9 से 11 मार्च को सेन्ट जोसफ़ कॉलिज, कोझीकोड़, केरल द्वारा आयोजित वानस्पतिक नामावली पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया। कार्यशाला का प्रायोजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा किया गया था।

कार्यशाला का उद्देश्य (i) नामावली के अन्तर्राष्ट्रीय कोड से संबंधित जागरूकता पैदा करना (ii) अनुबंध की सही व्याख्या और नियमावली से संबंधित जानकारी देना (iii) नामावली संबंधित नियमों में सार्थक परिवर्तन की जानकारी देना (iv) नियमावली की वैधानिक और गोपनीय भाषा की व्याख्या का प्रशिक्षण देना और (v) नामावली समस्याओं को हल करने का प्रशिक्षण देना था।

प्रो. रामचन्द्र, पूर्व प्राध्यापक, वनस्पति विभाग, भरतियार विश्व विद्यालय, कोयम्बटूर ने अपने उद्घाटन सम्बोधन में वानस्पतिक नामावली की महत्ता और नामावली कोड में परिवर्तन की आवश्यकता की बात कही। आदरणीय फ़ादर एन्टो एन.जे., वाइस प्रिंसिपल, सेन्ट जोसफ़ कॉलिज ने अध्यक्षीय भाषण दिया।

तकनीकी सत्रों के दौरान नामावली के विभिन्न पहलुओं – इतिहास, आवश्यकता और वर्तमान प्रवृत्ति, प्रायोगिक दृष्टिकोण, प्रभावी और प्रामाणिक प्रकाशन से सम्बंधित समस्याओं, लेखक उद्धरण से सम्बन्धित समस्याओं – पर आधारित व्याख्यान दिए गए। कार्यशाला में प्रयोगात्मक अभ्यास भी रखा गया था।

विभिन्न संगठनों से लगभग 25 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के वैज्ञानिक अधिकारियों में श्री अमीनुद्दीन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति), के.यू.चि.अ.प., मुख्यालय, श्री आर. मुरूगेसवरन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति), क्षे.यू.चि.अ.सं., चैन्नई और डॉ. काशिफ़ हुसैन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति), के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद ने कार्यशाला में भाग लिया।

• *अमीनुद्दीन एवं आर. मुरुगेस्वरन*

माघ मेला 2016 में स्वास्थ्य शिविर

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद् के अधीन कार्यरत क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, इलाहाबाद ने 17 जनवरी से 15 फरवरी तक संगम, इलाहाबाद में माघ मेला 2016 के तीर्थयात्रियों की स्वास्थ्य आवश्यकताओं को पूरा करने के उद्देश्य से एक स्वास्थ्य शिविर व प्रदर्शनी का आयोजन किया।

शिविर का आयोजन सतत विकास एवं ग़रीबी उन्मूलन हेतु कार्यरत एक संगठन, उत्थान केन्द्र के सहयोग से किया गया। इसका उद्घाटन इलाहाबाद विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. आर.पी. मिश्रा द्वारा किया गया। उद्घाटन अवसर पर डॉ. दीना नाथ तिवारी, पूर्व उप–सभापति, योजना आयोग, छत्तीसगढ़, डॉ. कौशल कुमार, सचिव, उत्थान केन्द्र, डॉ. मोहम्मद अहमद, पूर्व उप–अधीक्षक, राज्य यूनानी मेडिकल कॉलिज, इलाहाबाद और यूनानी चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े अनेक गणमान्य व्यक्ति और संत मौजूद थे।

शिविर में कार्यरत परिषद् के चिकित्सकों ने 1936 पुरूष व 696 महिला रोगी सहित कुल 2632 रोगियों का उपचार किया। स्वास्थ्य रक्षा और रोगों की रोकथाम पर आधारित यूनानी चिकित्सा के योगदान पर निःशुल्क साहित्य वितरण के अतिरिक्त सामान्य व दीर्घकालीन रोगों पर विशेष व्याख्यान आयोजित किए गए। इस अवसर पर परिषद की अनुसंधानिक गतिविधियों और उपलब्धियों को भी प्रदर्शित किया गया।

• *नियाज़*

आरोग्य मेलों में भागीदारी

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद ने हाल ही में आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों एवं अन्य भागीदारों के सहयोग से आयोजित विभिन्न राष्ट्रीय और राज्य आरोग्य मेलों/प्रदर्शनियों में भाग लिया।

इन मेलों का आयोजन पणजी, गोवा; पुणे, महाराष्ट्र; अम्बाला, हरियाणा; कोझीकोड़, केरल; जोधपुर, राजस्थान; राजकोट, गुजरात; और वाराणसी, यू.पी. में क्रमशः 27 से 30 मार्च; 19 से 22 मार्च; 3 से 6 मार्च; 31 जनवरी से 4 फरवरी; 28 से 31 जनवरी; 8 से 11 जनवरी; और 12 से 15 दिसम्बर को किया गया।

ये प्रदर्शनियाँ/मेले भारतीय चिकित्सा पद्धति का प्रचार–प्रसार करने, आयुष के अर्न्तगत अनुसंधानिक परिषदों की गतिविधियों और उपलब्धियों को उजागर करने, रोगी आगंतुकों को निःशुल्क निदान व उपचार प्रदान करने और स्वास्थ्य व रोगों के बारे में जानकारी प्रदान करने हेतु आयोजित किए गए।

इन मेलों के दौरान के.यू.चि.अ.प. ने नैदानिक अनुसंधान, औषधीय मानकीकरण, औषधीय पादपों का सर्वेक्षण व संवर्धन एवं साहित्यिक अनुसंधान के क्षेत्रों में की गई प्रगति को प्रदर्शित किया। यूनानी चिकित्सा पद्धति की विभिन्न संकल्पनाओं को उजागर करने वाले पोस्टरों और मानचित्रों का भी प्रदर्शन किया गया। इसके अतिरिक्त परिषद के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन भी प्रदर्शित किए गए। रोगों के उपचार में यूनानी चिकित्सा का योगदान और स्वस्थ जीवन के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने की धारणा के साथ यूनानी चिकित्सा पर निःशुल्क साहित्य भी आगंतुकों में वितरित किया गया। रोगी आगंतुकों को निःशुल्क यूनानी उपचार और परामर्श देने हेतु परिषद ने अपने चिकित्सक भी नियुक्त किए। परिषद के शोधकर्त्ताओं द्वारा विभिन्न स्वास्थ्य विषयों पर व्याख्यान भी दिए गए।

पणजी में राष्ट्रीय आरोग्य मेला

पणजी (गोवा) में राष्ट्रीय आरोग्य मेले का उद्घाटन श्री श्रीपाद नाईक, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय ने श्री लक्ष्मीकांत पारसेकर, मुख्य मंत्री, गोवा, श्री अनंत शेट, स्पीकर, गोवा विधान सभा, श्री फ्रांसिस डिसूज़ा, उप मुख्य मंत्री, गोवा, श्री राजेन्द्र अरलेकर, वन मंत्री, मिस अलीना सलदानहा, विज्ञान एवं तकनीकी मंत्री और विपक्ष के नेता श्री प्रताप सिंह राणे की उपस्थिति में किया।

इस अवसर पर श्री नाईक ने 21 जून 2016 को आयोजित होने वाले द्वितीय अर्न्तराष्ट्रीय योग दिवस का योग नयाचार भी जारी किया।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री नाईक ने बताया कि केन्द्रीय सरकार देश के प्रत्येक जनपद में एक आयुष चिकित्सालय खोलने पर विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि आयुष मंत्रालय की निकट भविष्य में गोवा में एक अखिल भारतीय योग एवं नेचुरोपैथी संस्थान और आयुष के अधीन प्रत्येक चिकित्सा पद्धति का एक यूनिट स्थापित करने की योजना है।

के.यू.चि.अ.प. की एक चिकित्सक 27–30 मार्च को पणजी, गोवा में आयोजित राष्ट्रीय आरोग्य मेले के दौरान एक मरीज़ का हिजामा (कपिंग) थ्रैपी से इलाज करती हुई।

श्री श्रीपाद नाईक, माननीय केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय 19–22 मार्च को पुणे में आयोजित राष्ट्रीय आरोग्य मेले में परिषद के स्टाल पर क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान के उपनिदेशक प्रभारी डॉ. मोहम्मद रज़ा से गुलदस्ता स्वीकार करते हुए।

पुणे में राष्ट्रीय आरोग्य मेला

श्री श्रीपाद नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने पुणे में राष्ट्रीय आरोग्य मेला का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्री अजीत एम. शरण, सचिव (आयुष), भारत सरकार और महाराष्ट्र सरकार के पदाधिकारी भी मौजूद थे।

अपने उद्घाटन भाषण में श्री श्रीपाद नाईक ने कहा कि आयुष पद्धतियाँ विभिन्न गैर संक्रामक रोगों और अन्य रोगों के उपचार में सक्षम हैं और भारत सरकार इस सामर्थ्यता का उपयोग करने में प्रयासरत है।

अम्बाला में राज्य आरोग्य मेला

अम्बाला में राज्य अरोग्य मेला का उद्घाटन श्री अनिल विज, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा और आयुष मंत्री, हरियाणा सरकार ने किया। अपने उद्घाटन सम्बोधन में उन्होंने कहा कि राज्य में शीघ्र ही एक समाकलित चिकित्सालय शुरू किया जाएगा जिसमें सभी परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों एवं आधुनिक चिकित्सा द्वारा स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। उन्होंने कहा कि अम्बाला में नए निर्माणाधीन अस्तपाल में एक तल आयुष चिकित्सा के लिए आरक्षित किया जाएगा ताकि स्वदेशी चिकित्सा का पूर्ण उपयोग किया जा सके।

कार्यक्रम को श्री अशोक सांगवान, उपायुक्त, अम्बाला, श्री पी.के. महापात्र, अतिरिक्त मुख्य सचिव (स्वास्थ्य), डॉ. साकेत कुमार, निदेशक, आयुष और हरियाणा के अन्य वरिष्ठ पदाधिकारियों ने भी सम्बोधित किया।

कोझीकोड़ में आरोग्य प्रदर्शनी

कोझीकोड़, केरल में आरोग्य प्रर्दशनी का आयोजन विश्व आयुर्वेद महोत्सव के तृतीय संस्करण के साथ 31 जनवरी से

डॉ. ज़कीउद्दीन और डॉ. मोहम्मद साजिद 3–6 मार्च को अम्बाला में आयोजित राज्य आरोग्य मेले में मरीज़ों को देखते हुए।

केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद की एक चिकित्सक 31 जनवरी से 4 फरवरी के बीच कोझीकोड़ में आयोजित आरोग्य प्रदर्शनी में मरीज़ को देखती हुईं।

4 फरवरी 2016 को किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 02 फरवरी को विश्व आयुर्वेद महोत्सव के विजन कॉन्कलेव को सम्बोधित करते हुए कहा कि देश में ऐसे स्वास्थ्य सेवा तंत्र की आवश्यकता है जो ग़ैर संक्रामक व जीवन शैली जनित रोगों का प्रसार कम कर सके। आयुर्वेद व योग ऐसी चिकित्सा पद्धतियाँ हैं जिनसे शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कल्याण किया जा सकता है। उन्होंने आगे कहा कि केन्द्रीय सरकार साकल्यवादी चिकित्सा की उपचार प्रभावकारिता को दृष्टिगत रखने के साथ–साथ लाभप्रद आर्थिक गतिविधि के प्रति भी दृष्टिगत है।

श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय ने कहा कि सरकार भारतीय चिकित्सा को वैश्विक स्तर पर प्रसारित करने के लिए एशिया व यूरोप के देशों से भी गठजोड़ कर रही है।

जोधपुर में राज्य आरोग्य मेला

श्री राजेन्द्र सिंह राठौर, माननीय स्वास्थ्य मंत्री, राजस्थान ने जोधपुर में राज्य आरोग्य मेला का उद्घाटन किया। उद्घाटन कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी सरकार आयुष पद्धतियों को बढ़ावा देने हेतु कृत संकल्प है और अगले वित्तीय वर्ष में बजट में वृद्धि करेगी। उन्होंने आगे कहा कि अस्पतालों में रिक्त स्थान आयुष डॉक्टरों द्वारा भरे जाएंगे और परम्परागत चिकित्सा से संबंधित 1700 पदों का सृजन किया जाएगा।

राजकोट में राज्य आरोग्य मेला

राजकोट में राज्य आरोग्य मेला का आयोजन, बहुक्षेत्रीय वाइब्रेंट सौराष्ट्र एक्सपो और समिट 2016 के भाग के तौर पर किया गया जिसमें आयुष पद्धतियों के एक मंडप सहित आठ विभिन्न खंडों के पवेलियन मौजूद थे। इस चार दिवसीय कार्यक्रम में दो लाख से अधिक लोगों ने अपनी रूचि प्रकट की। आगंतुकों ने मुख्यतः विभिन्न प्रकार की औषधियों व हर्बल उत्पाद की खरीदारी की।

मुख्य कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती आनन्दीबेन पटेल, माननीय मुख्य मंत्री, गुजरात द्वारा किया गया। कार्यक्रम में शामिल अन्य गणमान्य व्यक्तियों में श्री मोहन कुंदरिया, माननीय राज्य मंत्री, कृषि एवं कृषक कल्याण, भारत सरकार और श्री विजय रूपानी, माननीय मंत्री, परिवहन, जल आपूर्ति, श्रम एवं रोज़गार, गुजरात सरकार मुख्य थे।

वाराणसी में राष्ट्रीय आरोग्य मेला

वाराणसी में राष्ट्रीय आरोग्य मेला का उद्घाटन श्री श्रीपाद नाईक, माननीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सम्बोधन के दौरान, श्री नाईक ने कहा कि आयुष मंत्रालय की स्थापना के साथ भारत सरकार आधुनिक चिकित्सा के विकल्प के तौर पर सुरक्षित एवं किफ़ायती आयुष पद्धतियों के प्रचार–प्रसार में हर सम्भव प्रयास कर रही है।

कार्यक्रम को श्री अनिल कुमार गनेरीवाला, संयुक्त सचिव, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार और यू.पी. सरकार के पदाधिकारियों ने भी सम्बोधित किया।

• *नियाज़*

केरल के मुन्नार वन खंड में औषधीय पादपों का सर्वेक्षण

क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई के अनुसंधानकर्त्ताओं ने 16 नवम्बर से 10 दिसम्बर 2015 तक केरल राज्य के इदुक्की जनपद के मुन्नार वन खण्ड में प्रजाति वनस्पतीय सर्वेक्षण किया। इसका उद्देश्य क्षेत्र की औषधीय पादप संपदा का अवलोकन व पर्यवेक्षण करना था।

मुन्नार वन खंड केरल के मध्य भाग में इदुक्की जनपद में स्थित है। इसके अर्न्तगत चार वन श्रृंखलाएं मुन्नार, देवीकुलम, आदीमली और नेरीयामंगलम हैं। मुन्नार रेंज में लक्ष्मी और राजमलई वन क्षेत्र, देवीकुलम रेंज में ओ डी के, टॉप स्टेशन, साइलेन्ट वैली, पूपारा और बोदीमेतु वन क्षेत्र, आदीमली रेंज में चूराकोटा, चिन्नापारा और थुम्बीपारा वन क्षेत्र एवं नेरीयामंगलम रेंज में इन्चापारा, मुदुवनपारा, ममालीकन्डम, वलेरा और ऑडिट 4 मेनियम वन क्षेत्र इस सम्पन्न वन सम्पदा का सीमांकन करते हैं। ऊँचाई की विभिन्नता के कारण क्षेत्र के मौसम में बहुत परिवर्तन व विभिन्नताएं देखी जाती हैं। खंड का अधिकतर भाग पश्चिमी घाटों के पश्चिमी ढ़लान में पड़ता है। इस क्षेत्र में अप्रैल–मई के दौरान दक्षिण पश्चिम और उत्तर पूर्व मानसून से बारिश होती है। औसत वार्षिक वर्षा वृष्टि लगभग 3000 मिमी. है। सामान्यतः मानसून जून से शुरू होकर अगस्त तक रहता है। अधिक ऊँचाई वाले क्षेत्रों में मौसम लगभग संतुलित और तापमान 6°C से 26°C के बीच रहता है।

वनस्पतीय सर्वेक्षण के समय सर्वेक्षण टीम ने 4 वन श्रृंखलाओं के 20 वन क्षेत्रों का सर्वेक्षण किया। सर्वेक्षण के फलस्वरूप 259 पौधों की जाति के 778 नमूने एकत्र किये गये। इनमें कुछ मुख्य पौधे जो कि यूनानी चिकित्सा पद्धति में प्रयोग किये जाते हैं, इस प्रकार हैं: *एकिरेन्थस एस्पेरा* एल. (चिरचिटा), *हेमीडेसमस इंडिकस* (एल.) आर.बी.बार. (उश्बा हिन्दी), *डाइओसपाइरस मेलनोंजाइलोन* रोक्स्ब. (तेंदू), *पौन्गेंमिया पिन्नाटा* (एल.) पीयर. (कंरज), *सोलेनम नाइग्रम* (एल.) (अनाबुस्सालब), *एरूवा लनाटा* (एल.) ए. जस. (बिशेरी बूटी), *एलपिनिया गालंगा* एसडबल्यू (खुलंजान), *एलस्टोनिया स्कोलेरिस* (एल.) आर. बी आर. (काशिम), *केजेनस कजान* (एल.) मिल. एसपी. (अरहर), *अमारान्थस स्पाईनोसस* एल. (चौलाई खरदार), *अनाकार्डियम ऑक्सीडेन्टेल* एल. (काजू), *आर्टोकार्पस हेटरोफाइलस* लाम. (कठल), *एस्पेरेगस रेसीमोसस* विल्ड (सतावर), *बोहिनिया परपूरिया* एल. (कचनार), *केलोट्रोपिस गिगान्शिया* (एल.) आर.बी.आर. (मदार), *केप्सीकम अननुयम* एल. (फिलफिल अहमर), *केसिया ऑक्सीडेन्टेलिस* एल. (कसोन्दी), *केसिया टोरा* एल. (पनवार), *केथारेन्थस रोज़ियस* (एल.) जी. डॉन (सदाबहार), *क्लेरोडेंड्रम सेर्रेटम* (एल.) मून. (भारंगी), *क्लाइटोरिया टरनेटिया* एल. (माजरीयून), *कोकसीनिया ग्रांडिस* (एल.) जे. वोइट. (कंदूरी), *कुरकुलिगो ऑर्किऑइडिस* गाइर्टन (मूसली सियाह), *कुरकुमा लोंगा* एल. (ज़र्दचोब), *कस्कुटा रेफलेक्सा* राक्स्ब. (कसूस), *दतूरा मेटल* एल. (जौज़मासिल), *डोडोनिया विसकोसा* जेक. (जंगली अनार), *अरिथ्रिना इंडिका* लाम. (पांगरा), *यूफोरबिया हिर्टा* एल. (दूधी कलां), *फ़ाइकस हिस्पिडा* एल.एफ. (अंजीर दशती), *ग्लोरिओज़ा सुपरबा* एल. (मुलीम), *जिमनेमा सिल्वेस्टर* (एल.) आर. बीआर. (गुरमारबूटी), *हैलिक्ट्रस आइज़ोरा* एल. (मरोरफली), *प्लम्बेगों ज़ीलेनिका* एल. (शीतरज), *टेरोकार्पस मार्सूपियम*

सोलेनम वरजीनियम एल. (कताई खुर्द)

हीबिस्कस रोज़ाज़ीनिनसिस एल. (गुर्हल)

रोक्स्ब, (बीजासार), *रिसिनस कमयूनिस* एल. (बेदांजीर), *रुबिया कोर्डिफोलिया* एल. (मजीठ), *रुटा ग्रेवीओलेंस* एल. (सुदाब), *साइडा आक्युटा* बर्म.एफ. (कुंगोई), *सोलेनम नाइगरम* एल. (मको), *सोलेनम बर्जिनियानम* एल. (कटाई खुर्द), *साईजीजियम अरोमेटीकम* (एल.) मेर. एंड पेरी. (करनफुल), *टर्मेनेलिया अर्जुना* (रोक्सब, एक्स डी.सी.) डबल्यू. एंड ए. (अर्जुन), *राईटिया टिक्टोरिया* (रोक्स्ब) आर.बी.आर. (इन्दरजौ शीरीं), ज़िंजिबर ऑफ़िसिनेल रोस्क, (ज़ंजबील) आदि।

सर्वेक्षण टीम ने वलेरा फ़ोरेस्ट स्टेशन में इलमपेराचेरी, ममालीकन्डम और ओलावन्थोडू के जनजाति क्षेत्रों, माचीपुलव फ़ॉरेस्ट स्टेशन में चूराकोटा, चिन्नापारा, थुम्बीपारा और मुन्नार रेंज में सैन्डोज़ जनजाति कॉलोनी का सर्वेक्षण किया और क्षेत्रीय जनजाति व ग्रामीण लोगों द्वारा स्वास्थ्य रक्षा आवश्यकताओं हेतु उपयोग किए जा रहे पौधों के लोक चिकित्सीय दावों पर सूचनाएं एकत्र कीं। स्थानीय निवासियों से वार्त्तालाप द्वारा लगभग 40 लोक औषधीय दावे एकत्र किए गए। कुछ मुख्य औषधीय लोक दावे इस प्रकार हैं – *एकिरेन्थस एस्पेरा* एल. (नयारूवी) की पत्तियां घाव के लिये; *एरूवा लनाटा* (एल.) ए. जस. (सेरुपला) की पत्तियां गुर्दे की पथरी के लिये; *एलस्टोनिया स्कोलेरिस* (एल.) बीआर. *(इजिलाइपलाई)* का दूध सूजन और दर्द के लिये; *एलस्टोनिया वेनीनेटा* आर.बीआर. (पालामुनपाला) का दूध घाव के लिये; *अमारेन्थस स्पाईनोसस* एल. (मुल्लूकीरा) की पत्तियां जले हुये घाव के लिये; *एन्ड्रोग्राफ़िस अलाटा* नीस. (नीलाकंगीरम) की पत्तियां दमा के लिये; *आर्टिमिसिया नीलागिरिका* (सीएल.) पम्प (पचाईकरपुरम) की पत्तियां मांसपेशियों के दर्द के लिये; एस्पेरेगस रेसिमोसस विल्ड. (सतावरी) की मूसलाधार जड़ें आमाश्य के ज़ख्म के लिये; *बायोफ़ाइटम सेन्सिटिवम* (एल.) डीसीः (निलापुष्पम) की पत्तियां सूजन के लिये; *केलोट्रोपिस गिगेंशिया* (एल.) आर. बी.आर. (एरूकन) का दूध घाव भरने के लिये; *केसिया अलाटा* एल (वंशाकराई) की पत्तियां दाद के लिये; *केसिया ऑक्सिडेन्टेलिस* एल. (पोन्थागराई) की पत्तियां खुजली के लिये; *कोक्सिनिया ग्रान्डिस* (एल.) वॉइट (कोवालम) के फल डाईबिटीज़ के लिये; कॉस्टस स्पेसिओसस एसएम. (कोस्टम) की पत्तियां मासिक धर्म सम्बन्धित विकार के लिये; *क्रोटॉन टिगलियम* एल. (नरवालम) के फल चर्म रोगों के लिये; *कुरकुमा एरोमेटिका* सैलिस्ब. (कस्तूरीमंजल) का

हेलिकटेरस इसोरा एल. (मारोफली)

क्रोटोन टिग्लियम एल. (जमालगोटा)

तना चेहरे पर गहरे निशान होने पर; *कुरकुमा लोंगा* एल. (मन्जल) का तना पैरों के फटने पर; *हैलिक्ट्रस आईज़ोरा* एल. (एदमपुरीवलमपुरी) के फल रूसी दूर करने तथा बालों को बढ़ाने के लिये; *पाईपर नाईग्रम* एल. (मिलाघू) के फल शुष्क खाँसी में; *हैमीडेस्मस इन्डिकस* (एल.) आर. बीआर. (नन्नारी) की जड़ें जॉन्डिस के लिये; *हिबिस्कस रोज़ा–साईनेन्सिस* एल. (सेमपारूथी) की पत्तियाँ तथा फूल बालों के गिरने के लिये; *हिडरोकार्पस वीटियाना* बीएल. (मरावेट्टी) के बीज तथा छाल डेन्ड्रफ और गठिया के दर्द के लिये; *केम्फ़ेरा गालंगा* एल. (कचोलम) का तना खूनी बवासीर में, *मिमोज़ा प्यूडिका* एल. (थोट्टालवड़ी) की पत्तियां खुजली के लिये; *माईरिस्टिका फ़्रग्रेन्स* हॉट. (जादीकाली) की जावित्र पेट दर्द तथा गैस के लिये; *ओसिमम बेसिलिकम* वेराईटी पुरपुरियेन्स बैंथ. (तुलसी) की पत्तियां खाँसी के लिये; *पाईपर लोंगम* एल. (थिपली) के फल मांसपेशियों में खिचाव के लिये; *प्लांटेगो ओवेटा* फ़ोर्सक. (इस्पगोल) के बीज मासिक धर्म विकार के लिये; *प्लंबेगो जीलेनिका* एल. (किदवेलम) की पत्तियां लेपरोसी तथा घाव के लिये; *रिसिनस कम्यूनिस* एल. (अमानाकू) की पत्तियां जॉन्डिस के लिये; *रूटा ग्रेवियोलेंस* एल. (एरूवाथम) की पत्तियां गठिया के दर्द में; *स्कोपेरिया डलसिस* एल. (कलूलुकी) का सम्पूर्ण पौधा संक्रामक बुखार के लिये; *साईडा रोम्बिफ़ोलिया* एल. (कुरूनथोट्टी) की पत्तियां सूजन के लिये; *सोलेनम नाइग्रम* एल. (मानीथकाली) के फूल एवं फल जॉन्डिस के लिये; *सोलेनम टोर्वम* एस.डब्लू. (सुन्दाई) के फल पेट दर्द के लिये; *साईज़ीजियम एरोमेटिकम* (एल.) मेर्र. एन्ड पैरी. (कुरूम्बू) के फल और पत्तियां दाँत दर्द के लिये; *केथारेन्थस रोज़ियस* (एल.) जी.डॉन. (निथियाकल्यानी) की पत्तियां घाव के लिये; *टेबरनीमोन्टाना डाईवेरीकेटा* (एल.) आर. बी आर. एक्स एन्ड शुल्ट्स (नन्दियावाट्टम) की पत्तियां और फूल चर्म रोगों में; *राईटिया टिन्कटोरिया* आर. बी आर. (पाला) की पत्तियां डेन्ड्रफ तथा बाल गिरने में तथा जिंजिबर ऑफिसिनेल रोस्क. (इन्गी) गले के दर्द के लिये उपयोग किये जाते हैं।

के.यू.चि.अ.प. के क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, चेन्नई के शोधकर्त्ता स्थानीय लोगों से औषधीय पौधों के प्रति लोक दावे एकत्र करने हेतु वार्तालाप करते हुए।

सर्वेक्षण टीम का नेतृत्व श्री आर. मुरूगेस्वरन, अनुसंधान अधिकारी (वनस्पति) द्वारा किया गया। टीम के अन्य सदस्यों में हकीम हाफ़िज सी. मो. असलम, अनुसंधान सहायक (वनस्पति), श्री लक्ष्मी नारायण, क्षेत्र परिचारक और श्री एम. संकर, ड्राइवर शामिल थे।

• *रिपोर्टः अमीनुद्दीन*
इनपुटः आर. मुरुगेस्वरण

सेवानिवृत्तियां

श्री फ़ैयाज अहमद बज़ाज़, सहायक निदेशक (प्रशासन), के.यू.चि.अ.प. मुख्यालय, 30 अप्रैल को सेवानिवृत्त हुए। परिषद् में उनकी नियुक्ति 26 जनवरी 1979 को स्टोर कीपर के पद पर हुई थी। वह जून 1992 में सहायक और जुलाई 1994 में कार्यालयाध्यक्ष/कनिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पद पर प्रोन्नत हुए। उन्होंने जून 2008 में प्रशासनिक अधिकारी और मार्च 2016 में परिषद् मुख्यालय में सहायक निदेशक (प्रशासन) का कार्यभार संभाला।

श्री मोहम्मद वासिक़ इमाम, प्रशासनिक अधिकारी, के.यू.चि.अ.प. मुख्यालय 29 फरवरी 2016 को सेवा निवृत्त हुए। वह 5 मार्च 1979 को एल.डी.सी. के पद पर नियुक्त हुए थे। अपने 36 वर्षीय कार्यकाल में उन्होंने परिषद मुख्यालय व संस्थानों में प्रशासनिक, लेखा और स्थापना अनुभाग में विभिन्न प्रकार के कार्यों का संचालन किया। वह अनेक विभागीय जाँच में प्रिज़ेंटिंग ऑफ़ीसर भी नियुक्त हुए। अलीगढ़ में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने 150 औषधिय पौधों से सुसज्जित एक औषधीय पादप उद्यान भी विकसित किया।

डॉ. ख्वाजा बहाउददीन अन्सारी, उपनिदेशक प्रभारी, क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, पटना 30 अप्रैल को सेवानिवृत्त हुए। परिषद् में उनकी नियुक्ति 24 अप्रैल, 1981 को क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई में अनुसंधान सहायक (यूनानी) के पद पर हुई थी। वर्ष 2000 में वह सहायक अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के पद पर प्रोन्नत हुए। उन्होंने 2005 में अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) और 2011 में सहायक निदेशक (यूनानी) का पदभार संभाला। उन्हें जनवरी 2016 में क्षे.यू.चि.अ.सं., पटना में उपनिदेशक प्रभारी का दायित्व सौंपा गया। अपने सेवाकाल के अधिकतर समय में वह के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद में नियुक्त रहे।

डॉ. मुशीर अहमद ख़ान, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद 31 जनवरी को सेवा निवृत्त हुए। वह 4 जून 1986 को अनुसंधान सहायक (यूनानी) के पद पर नियुक्त हुए थे। वह फरवरी 1996 में तदर्थ आधार पर और जून 1996 में नियमित तौर पर सहायक अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के पद पर प्रोन्नत हुए। अगस्त 2005 में उन्होंने अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) का पदभार संभाला।

डॉ. एस. मनजूर अहमद, अनुसंधान अधिकारी (यूनानी), क्षे.यू.चि.अ.सं., चेन्नई 31 मार्च को सेवा निवृत्त हुए। परिषद् में उनकी नियुक्ति 11 जून 1986 को तदर्थ आधार पर अनुसंधान सहायक के पद पर हुई थी और वह दिसम्बर 1994 में इसी पद पर नियमित हुए। वह जनवरी 1996 में सहायक अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) और अगस्त 2002 में अनुसंधान अधिकारी (यूनानी) के पद पर प्रोन्नत हुए।

श्री मोहम्मद जाफ़र हुसैन ख़ान, हेल्पर, के.यू.चि.अ.सं., हैदराबाद 29 फरवरी को सेवानिवृत हुए। वह 24 जुलाई 1976 को नियुक्त हुए थे।

श्रीमती अर्चना गुहा, आया, क्षे.यू.चि.अ.सं., भद्रक 29 फरवरी को सेवा निवृत्त हुई। वह प्रारम्भ में 05 दिसम्बर 1980 को तदर्थ आधार पर नियुक्त हुई थीं और 18 जनवरी 1982 को नियमित हुईं।

(पृष्ठ 9 का शेष)

कार्यशाला का उद्घाटन 3 मार्च को श्री श्रीपाद येस्सो नाईक, केन्द्रीय राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), आयुष मंत्रालय और श्री रिचर्ड वर्मा, भारत में अमेरिकी राजदूत और राजदूत जिम्मी कोलकर, सहायक सचिव, ग्लोबल अफ़ेयर्स, एच एच एस द्वारा संयुक्त रूप से किया गया।

प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए श्री श्रीपाद नाईक ने कहा कि आयुष का वैश्वीकरण हमारी सरकार की मुख्य योजनाओं में से एक है और इस दिशा में ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। इस क्षेत्र में भारत एवं अमेरिका के मध्य रचनात्मक सहयोग परम्परागत चिकित्सा में दोनों पक्षों द्वारा और अधिक वैज्ञानिक निवेश के समावेशन के लिए महत्त्वपूर्ण है जिससे विश्व स्तर पर रोगी स्वास्थ्य देखभाल में आयुष पद्धतियों को मुख्यधारा में लाने में सहायता मिलेगी।

परम्परागत चिकित्सा, आधुनिक चिकित्सा, जैव वैज्ञानिक और भारत एवं अमेरिका के शोधकर्त्ताओं व विशेषज्ञों सहित लगभग 175 प्रतिभागियों ने इस प्रकार की प्रथम कार्यशाला में भाग लिया। परिषद् से प्रो. रईस–उर–रहमान, महानिदेशक और डॉ. ख़ालिद महमूद सिद्दीक़ी, उप महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प. ने कार्यक्रम में भाग लिया।

• *नियाज़*

विज्ञान साक्षरता उत्सव – 2016 में भागीदारी

के.यू.चि.अ.प. ने 21 से 23 फरवरी 2016 को झंझारपुर, मधुबनी (बिहार) में आयोजित विज्ञान साक्षरता उत्सव–2016 में भाग लिया। कार्यक्रम का आयोजन सेन्टर फॉर स्टडीज़ ऑफ़ पॉपुलर साइन्सिज़ ने आयुष मंत्रालय और अन्य सरकारी विभागों के सहयोग से किया था।

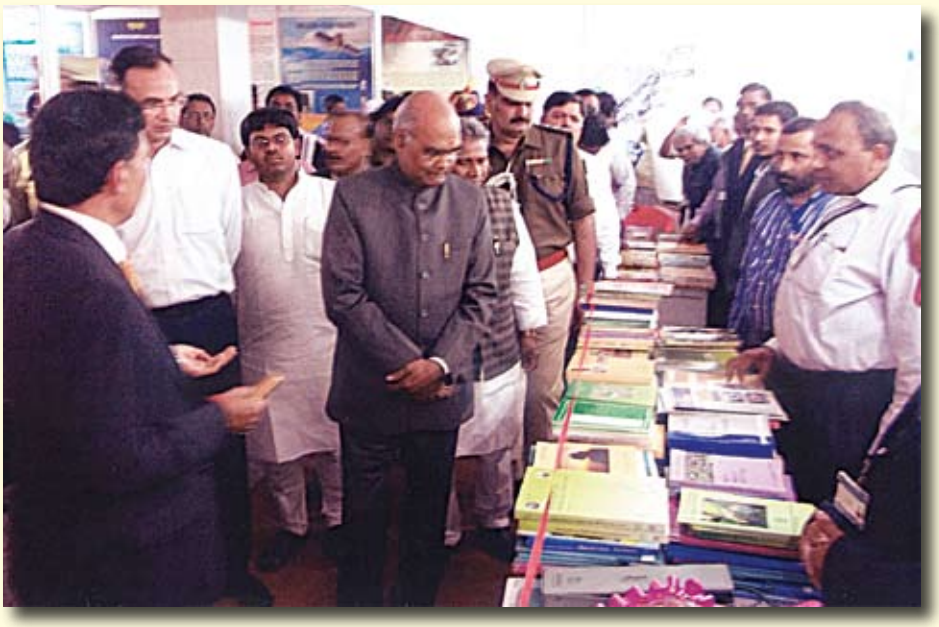

श्री राम नाथ कोविन्द, माननीय राजपाल, बिहार प्रदेश तथा श्री बिरेन्द्र कुमार चौधरी, संसद सदस्य बिहार के झंझारपुर में आयोजित विज्ञान साक्षरता उत्सव 2016 में 21 फरवरी को आयुष स्टाल का अवलोकन करते हुए।

श्री राम नाथ कोविन्द, माननीय राज्यपाल, बिहार प्रदेश ने 21 फरवरी को कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कहा कि विज्ञान का मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान है और इससे पूरा विश्व एक गाँव में परिवर्तित हो चुका है। उन्होंने कहा कि विज्ञान हमें अवबोधन की अपेक्षा वैज्ञानिक मापदण्डों और कारणों पर कार्यों को परखना बताता है।

इस अवसर पर बोलते हुए, श्री बिरेन्द्र कुमार चौधरी, संसद सदस्य, झंझारपुर ने कहा कि विज्ञान के अविष्कारों से मानव जीवन सरल हो गया है। ''मेक इन इंडिया'' प्रोग्राम को एक अच्छी शुरूआत बताते हुए उन्होंने कहा कि इससे देश के लोगों को रोज़गार मिलेगा और पलायन कम होगा। के.यू.चि.अ.प. ने कार्यक्रम में भाग लिया और जीवन विज्ञान की भूमिका और रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य देखभाल में यूनानी चिकित्सा के योगदान के बारे में लोगों को जागरूक किया।

• *नियाज़*

पंजीकरण सं. 34691/80

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर

सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *वर्ष में छः बार प्रकाशित होता है। जनवरी 2014 से यह सिर्फ अंग्रेज़ी की बजाय हिन्दी और अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं में एक साथ प्रकाशित हो रहा है। इसमें विशेषतः केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद से, जो आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्त निकाय है, संबंधित समाचार होते हैं। यह ऐसे व्यक्तियों और संस्थाओं के लिए मुफ़्त उपलब्ध है जो यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में दिलचस्पी रखते हैं।* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *में प्रकाशित सामग्री को* सी.सी.आर.यू.एम. न्यूज़लेटर *के आभार के साथ, इस शर्त पर प्रकाशित किया जा सकता है कि वह प्रकाशन व्यापारिक उद्देश्यों से न किया जाये।*

महानिदेशक व मुख्य संपादकः
प्रो. रईस–उर–रहमान

कार्यकारी संपादकः
मोहम्मद नियाज़ अहमद

संपादकीय समितिः
खालिद एम. सिद्दीक़ी
ज़कीउद्दीन
सलीम सिद्दीक़ी
क़मर उद्दीन

संपादकीय कार्यालयः
केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद
61–65, इंस्टीटयूशनल एरिया, समुख 'डी' ब्लाक, जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

दूरभाषः +91–11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
फैक्सः +91–11/28522965
ई–मेलः unanimedicine@gmail.com
वेबसाइटः www.ccrum.net

मुद्रणः रैक्मो प्रैस प्रा. लि.
सी–59, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस–1
नई दिल्ली–110020

ISSN 0974 1666

CCRUM newsletter

A Bi-monthly Bulletin of Central Council for Research in Unani Medicine

Volume 36 • Number 1-2 January–April 2016

National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Contributions

Need to extend legacy of Ajmal Khan stressed

The CCRUM's Hakim Ajmal Khan Institute for Literary and Historical Research in Unani Medicine (HAKILHRUM) in collaboration with Jamia Millia Islamia organized a two-day 'National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Enduring Contributions' during 12–13 February at New Delhi. The seminar highlighted various aspects of Hakim Ajmal Khan's life and contributions and stressed the need to extend his legacy of unity in diversity, patriotism and research and development in indigenous systems of medicine. It also demanded to recognize Hakim Sahib's contributions by awarding him Bharat Ratna and establish a university for Unani Medicine.

The seminar had six technical sessions, besides inaugural and valedictory sessions. During the two-day deliberations, over 50 papers were presented on different aspects of multidimensional personality of Hakim Ajmal Khan. On this occasion, five important publications of the Council were also released and contributions of various savants of Unani Medicine were recognized by awarding them

Hon'ble Union Minister of Minority Affairs Dr. Najma Heptulla along with other dignitaries releasing Souvenir & Book of Abstract of 'National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Enduring Contributions' during its inaugural session at Jamia Millia Islamia, New Delhi on 12 February 2016.

lifetime achievement awards and appreciation awards.

Inaugural Session

The seminar was inaugurated by Dr. Najma Heptulla, Hon'ble Union Minister of Minority Affairs. In her inaugural speech, she said that Hakim Ajmal Khan was such a unique ambassador of unity in diversity and communal harmony that nobody doubted his character, credibility or intention and that's why he presided the sessions of Muslim League on the one hand and that of Hindu Mahasabha on the other. She further said that Hakim Sahib left behind a legacy of developing and promoting our indigenous knowledge and science and there was a need to extend that legacy. It would be a great tribute to Hakim Sahib if we could update our indigenous medicine systems according to the current needs and take his Tibbi mission forward by conducting scientific and need-based research. She also advocated for inclusion of Hikmat in school curriculum.

Prof. Talat Ahmad, Vice-Chancellor, Jamia Millia Islamia said that Hakim Ajmal Khan was a multifaceted personality and a versatile genius who played pivotal role in the establishment and development of Jamia Millia Islamia and other academic institutions. He emphasized that Jamia and CCRUM should jointly initiate research in such areas where the two institutions could establish themselves as leaders. He further said that it was a proud moment for Jamia to join hands with CCRUM in the organization of the seminar to mark the 148th birth anniversary of Hakim Sahib.

Speaking on the occasion, Dr. G.N. Qazi, Vice-Chancellor, Jamia Hamdard said that Hakim Ajmal Khan was one of the pioneers of Unani Medicine. He indeed laid a great path for modern scientists to look into the chemical constituents of various herbs used in traditional medicines in India. He was not only a Hakim and a freedom fighter, but also a great institution builder and it was Hakim Abdul Hameed who accomplished many of his works that he could not complete in his life.

In his keynote address, Prof. Altaf Ahmad Azmi mentioned that besides being a great healer, Hakim Ajmal Khan was a renowned scholar of Arabic and Persian literature and a prolific writer. He made immense contribution to educational advancement of the Indian Muslims and uplifting of Unani Medicine.

Earlier in his welcome address, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM stated that there was a need of extending Hakim Ajmal Khan's legacy of unity in diversity, patriotism and research

Hon'ble Union Minister of Minority Affairs Dr. Najma Heptulla addressing the inaugural session of 'National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Enduring Contributions' in New Delhi on 12 February 2016.

and development in indigenous systems of medicine. He complained that the contributions of Hakim Ajmal Khan didn't get due recognition and urged that the Government of India should confer Bharat Ratna on him. He further said that had Hakim Sahib not brought Ayurveda and Unani systems under one roof, the Government of India could not have thought of organizing different indigenous medicine systems under AYUSH. He stated that since its inception the CCRUM had been making sincere and well-planned efforts in research in the areas of survey and cultivation of medicinal plants, drug standardization, clinical research and literary research in Unani Medicine.

On this occasion, the dignitaries released Souvenir & Book of Abstract of the seminar, special issue of CCRUM's scientific Urdu journal Jahan-e-Tib on Hakim Mazhar Subhan Usmai, and three other publications. A special book entitled 'Nishan-i Ajmal' by Dr. Mohammad Fazil, Research Officer Incharge, HAKILHRUM and Dr. Fakhre Alam, Research Officer (Unani), HAKILHRUM was also released.

Recognizing their contributions to the cause of Unani Medicine, the CCRUM conferred posthumous Lifetime Achievement Awards on Hakim Mazhar Subhan Usmani and Prof. Isthiyaq Ahmad. The Lifetime Achievement Award was also conferred on Prof. Abdul Jabbar Khan whereas Hakim Khurshid Ahmad Shafqat Azmi, Hakim Wasim Ahmad Azmi and Dr. Shariq Ali Khan were honoured with Appreciation Awards.

Prof. Abdul Haq, Dr. Wasim Ahmad Azmi, Dr. K.A.S. Azmi, Dr. Ahmed Sayeed and Dr. Usama Akram during a technical session of 'National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Enduring Contributions' held in New Delhi during 12–13 February.

The inaugural session concluded with vote of thanks extended by Dr. Mohammad Fazil, Organizing Secretary of the seminar.

Technical Sessions

The first of the six technical sessions was themed on 'Hakim Ajmal Khan: A successful physician and visionary architect of research and education in Unani Medicine'. The highlight of the session was the invited lecture on 'Ajmal Khan's vision: Retaining and re-strengthening traditional character of Unani Medicine' delivered by Prof. K.M.Y. Amin. Besides, Prof. Anis Ahmad Ansari, Prof. Abdul Wadud and Dr. Ghulamuddin Sofi were also among the resource persons who presented their papers on the theme.

A view of audience during a technical session of 'National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Enduring Contributions' held in New Delhi during 12–13 February.

Dr. Khalid M. Siddiqui, Prof. Rais-ur-Rahman, Dr. Ummul Fazal, Mr. Mehr-e-Alam Khan, Dr. Mohammad Khalid Siddiqui, Dr. Sagheer A. Siddiqui, Dr. Rashidullah Khan and Dr. Mohammad Fazil posing for a group photo at the concluding session of 'National Seminar on Hakim Ajmal Khan's Multidimensional Personality and Enduring Contributions' held in New Delhi during 12–13 February.

The second session had deliberations on Hakim Ajmal Khan as a writer and poet, while the third one was related to his speeches and contributions of Unani scholars nurtured by him. Each of the sessions had five papers and an invited lecture.

The fourth session discussed the contribution of Hakim Ajmal Khan's family – Khandan Sharifi in the upliftment of Unani Medicine and the fifth session elaborated on Hakim Sahib's political wisdom and role in the freedom struggle of India, whereas the sixth session was related to contributions of Hakim Sahib as an educationist. All together, over 50 papers were presented in the six technical sessions, besides each session having one invited lecture.

Valedictory Session

The valedictory session had Dr. Ummul Fazal, formerly Director of CCRUM as the chief guest. Dr. Mohammad Khalid Siddiqui, Prof. Syed Shakir Jamil, both formerly Director General, CCRUM; Prof. Rais-ur-Rahman, Adviser (Unani), Ministry of AYUSH & Director General, CCRUM; Dr. Khalid Mehmood Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM; Dr. Rashidullah Khan, Vice President, Central Council of Indian Medicine (CCIM); and Dr. Sagheer Ahmad Siddiqui, Nodal Officer, Jamia Millia Islamia were the other dignitaries present on the dais.

To begin with, Prof. Rais-ur-Rahman summarized key points of presentations made during different sessions of the seminar and appreciated the speakers for their valuable deliberations covering different aspects of life and contributions of Hakim Ajmal Khan. He remembered the services of former stakeholders towards CCRUM and made a special mention of the founder director Hakim Abdul Razzack. He also expressed his concerns about the pace of research and development in the system and requested the stakeholders to come forward and do their duties with honesty, dedication and commitment.

Dr. Rashidullah Khan congratulated the organizers for holding such a meaningful seminar and gave brief account of different steps taken by the CCIM to improve standard of education in different colleges.

Dr. Mohammad Khalid Siddiqui, formerly Director General, CCRUM recalling the journey of research in the previous century and landmarks of the Council expressed his expectations about the bright future of the system and laid emphasis on dedication required for such great causes.

Speaking on the occasion, Dr. Ummul Fazal recalled the efforts made by the then director of the Council in its early days and specially mentioned the organization of international seminar organized in 1987 for the development and propagation of Unani System of Medicine.

Concluding the session, Dr. Khalid Mehmood Siddiqui extended gratitude to the chief guest, dignitaries, delegates, guests, audience, media persons and staff of the Council for making the seminar a grand success. • ***Niyaz***

Foundation stone laid for RRIUM, Mumbai building

Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (I/C) for AYUSH laid the foundation stone for a combined building of CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Mumbai and CCRH's Regional Research Institute of Homoeopathy at Kharghar, Navi Mumbai on 28 December 2015.

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (I/C) for AYUSH unveiling the plaque to lay the foundation stone of Regional Research Institutes of Unani Medicine and Homoeopathy at Kharghar, Navi Mumbai on 28 December 2015. Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM and Dr. Raj K. Manchanda, Director General, CCRH are also seen.

Addressing the foundation stone laying ceremony, Shri Shripad Naik said that high quality research in AYUSH systems is essential for their development and utility in the healthcare delivery. He reiterated that the Government of India is committed for the strengthening of infrastructure and research institutes of AYUSH systems. This upcoming institute is a significant step of the Government for inculcating research aptitude in students of various colleges already functional in Maharashtra, the Minister explained. He urged the Maharashtra Government to utilize the benefits of centrally sponsored schemes and establish AYUSH colleges in the state.

Dr. Kuldip Raj Kohli, Director, AYUSH, Government of Maharashtra said that the State Government is concerned about the development of AYUSH institutes, hospitals and colleges. He also suggested that once the construction of building is completed, the Unani and Homeopathy institutes should start postgraduate education in the respective systems.

Shri Prashant Thakur, Member of Maharashtra Legislative Assembly appreciated the move to choose Kharghar district for the establishment of the institutes saying that the district has underserved tribal population that would be benefited from the healthcare services of AYUSH systems.

Speaking on the occasion, Dr. Arun Bhasme, Vice President, Central Council of Homoeopathy said that there is a need to develop AYUSH infrastructure in the state. This can be done under the patronage of the Ministry of AYUSH with the active involvement of the state government.

Earlier, Director General of CCRUM Prof. Rais-ur-Rahman and Director General of CCRH, Dr. Raj K. Manchanda welcomed all the dignitaries and motivated AYUSH fraternity to undertake innovative research projects.

The function was attended by a number of senior Homoeopathic and Unani researchers and physicians from all over the state as well as students of Homoeopathy and Unani colleges. • ***Niyaz***

CCRUM welcomes GB members

The Central Council for Research in Unani Medicine organized a welcome meeting for the newly nominated non-official members of its Governing Body (GB) at its headquarters in New Delhi on 10 April. The meeting aimed at apprising them of the Council's research activities and overall functioning. The new GB had been constituted and notified on 14 March 2016 upon expiry of the term of the previous GB.

A view of the meeting held on 10 April at CCRUM headquarters to welcome the non-official members of the Council's reconstituted Governing Body notified on 14 March 2016.

Presiding over the meeting, Prof. A. Ray, Vallabhbhai Patel Chest Institute said that unlike the modern medicine, traditional medicines have no side effects, but it is unfortunate that the former still occupy the centre stage perhaps due to the fact that the later have not been propagated to the extent they needed. He emphasized that validation and standardization are two important tasks that need to be done to popularise the traditional systems of medicine. He also advised that researchers of AYUSH systems should interact with that of modern medicine to benefit each other.

On this occasion, Dr. Rameshwar Dayal, formerly Scientist F and Head, Chemistry Division, Forest Research Institute emphasized the need to validate folk claims about medicinal plants. Dr. Sirajuddin Ahmad appreciated the Council's research work and said that acceptance of Indian traditional systems of medicine is nowadays increasing which is a good development. He suggested that synopses of M.D. theses should be published in the interest of the scientific community. Dr. Veena Gupta, Senior Scientist, National Bureau of Plants Genetic Resources stressed the need to expedite research on local medicinal plants. Prof. Hasibun Nisa stressed that there is a need to propagate the activities and achievements of the Council. Dr. M.A. Waheed, formerly Deputy Director Incharge, Central Research Institute of Unani Medicine, Hyderabad highlighted the need to work for globalization of Unani Medicine through quality research and urged that the researchers should be encouraged to publish their research. Dr. Tasleem Bano suggested that graduates of Unani Medicine should be encouraged to practice only Unani Medicine in the interest of the system. Dr. Madan Singh Jakhar suggested that the CCRUM should establish its research centre in Faridabad/ Mewat also. Hakim Khurshid Murad Siddique, Vice President (Technical) and Prof. Govind K. Makharia, Expert in Modern Medicine were not available to attend the meeting.

Earlier in his introductory remarks, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM welcomed the GB members and briefed them on the Council's research endeavours. He said that the credit for initiating organized research in Unani Medicine in India goes to Hakim Ajmal Khan whose efforts drew the attention of the Government of India towards the

(Contd. on page 7)

Secretary (AYUSH) visits RRIUM, Srinagar

Shri Ajit M. Sharan, Secretary (AYUSH), Government of India visited CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine, Srinagar on 12 April. Accompanied by Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM, Shri Sharan went around different units of the institute and took stock of their functioning.

Shri Ajit M. Sharan, Secretary (AYUSH), Government of India and Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM visiting Toxicology Laboratory of RRIUM, Srinagar on 12 April.

During his visit, Shri Sharan had detailed interaction with Dr. Seema Akbar, Research Officer Incharge and officials of the institute. He was apprised of the achievements attained by the institute in the area of research. He was also apprised of the use of agro techniques for successful cultivation of some endangered Unani medicinal plants in the herbal garden of the institute. He was impressed with the infrastructure of Toxicology Unit developed with funding from the Department of Science and Technology, Government of India.

Overwhelmed with the infrastructure and the expertise available, Shri Sharan advised to upgrade the institute to a central research institute and initiate efforts to get it recognized for awarding M.D. (Unnai) and M.Phil. / Ph.D. degrees in allied subjects. He also suggested to partner with various departments of the University of Kashmir for undertaking collaborative research.

• ***Niyaz***

(Contd. from page 6)

development and promotion of traditional systems of medicine that later resulted in the establishment of CCRUM and similar organizations. He further said that skin diseases, joint disorders and liver diseases are some important strength areas of Unani Medicine where the Council has attained leads in its research. Non-communicable diseases, lifestyle diseases and emerging diseases are some thrust areas where the Council would be focusing its activities in the coming years, he added. He said that the Council is working on the expansion of its footprint and plans to establish research institutes in Goa, Bhopal and Andhra Pradesh.

Through his PowerPoint Presentation, Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM informed the guests in detail about the background, aims and objectives, institutional network, research programmes, activities and achievements, recent developments and initiatives of the Council.

The meeting ended with vote of thanks extended by Dr. Khalid M. Siddiqui. It was attended by the officers of the CCRUM headquarters.

Memorial Lecture on Hakim M.A. Razzack

Hakim M.A. Razzack was a great personality who devoted his life for all-round development and promotion of Unani Medicine and the system is currently in need of one more M.A. Razzack for its further development, said Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM in his welcome address during Hakim M.A. Razzack Memorial Lecture organized by the Council to mark the birth anniversary of its founding director on 8 April at Jamia Hamdard, New Delhi.

Mr. Sohail Razzack addressing Hakim M.A. Razzack Memorial Lecture organized by the CCRUM on 8 April at Jamia Hamdard, New Delhi. Dignitaries on the dais are Dr. Khalid M. Siddiqui, Dr. Ummul Fazal, Prof. Talat Ahmad, Prof. Rais-ur-Rahman and Dr. Mushtaq Ahmad.

Prof. Rais-ur-Rahman further said that what Hakim M.A. Razzack achieved in the area of development and organization of Unani System of Medicine during his short span of life, can't be achieved by an entire generation. He termed the establishment of a separate research council for Unani Medicine as his greatest achievement.

Prof. Talat Ahmad, Vice Chancellor, Jamai Millia Islamia, New Delhi said that from the perspective of Jamia Millia Islamia, Unani Medicine also bears historical and cultural significance besides being a medical science. He further said that Jamia was making efforts to establish a Unani medical college as well as a modern medical college. Referring to the MoU signed between Jamia and CCRUM, he said that he was ready to extend all support to the CCRUM for interdisciplinary research in Unani Medicine and urged that both the institutions should work collectively to establish themselves as leader of the field.

Delivering his extensive lecture, Dr. Mushtaq Ahmad, former director of Central Research Institute of Unani Medicine, Hyderabad said that Hakim M.A. Razzack not only contributed to the cause of Unani Medicine in India but also proved instrumental in the introduction and recognition of the system on foreign soils. He further said that Hakim M.A. Razzack was so much devoted for the cause of Unani Medicine that on the one hand he was director of CCRUM, and on the other he was associated with All India Unani Tibbi Conference as well.

Speaking on the occasion, Mr. Sohail Razzack, son of Hakim M.A. Razzack said that his father had a vision for the development of Unani Medicine and spent his entire life to realize that vision. He felt that there was a need to modernize Unani Medicine in order to make it widely accepted by the scientific world.

In her presidential address, Dr. Ummul Fazal, formerly Director of CCRUM citing the efforts of Hakim M.A. Razzack for the promotion of Unani Medicine outside India asked the researchers and practitioners not to limit their efforts to the Indian soil and urged them to take it to foreign lands.

At the end, Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM proposed vote of thanks to the guests, researchers, academicians and students who participated in the event. ■

India–US Workshop on Traditional Medicine

India, US to partner for research on AYUSH

The Ministry of AYUSH, Government of India and the US Government organized a two-day India–US Workshop on Traditional Medicine during 3–4 March at New Delhi. Held under the auspices of the first US–India Health Dialogue held in September 2015 in Washington, D.C., the workshop aimed to collaborate on research and development of traditional medicines for preventive and palliative cancer care.

Union Minister of State (I/C) for AYUSH Shri Shripad Naik (third from left) and other dignitaries at India-US Workshop on Traditional Medicine held during 3–4 March 2016 at New Delhi.

Representatives from the US Department of Health and Human Services (HHS), Office of Global Affairs (OGA), the National Institutes of Health (NIH), National Cancer Institute (NCI), and the US academic institutions participated in the workshop. From the Indian side, experts of traditional medicine and stakeholders of AYUSH systems, oncologists and scientists from premier research and clinical institutions participated in the workshop.

During the deliberations, strengths of AYUSH systems in the management of various disease conditions were showcased. The highlight of discussions remained role of AYUSH systems in prevention, cure and management of cancer which was discussed in threadbare details.

Both sides agreed in principle on collaboration in standardization and quality improvement of AYUSH products. It was agreed in principle to form joint working groups on the two sides to take forward the consultation process and mutual learning on sustainable basis. An MoU between the Ministry of AYUSH and the US Department of Health and Human Services (HHS) is also expected to be signed in due course of time.

Apart from tangible collaboration between India and the US, the Ministry of AYUSH also identified various stakeholders and scientific institutions with which it plans to work closely in mainstreaming AYUSH in cancer management. The Ministry of

(Contd. on page 19)

CCRUM's libraries now on NIC cloud

The Central Council for Research in Unani Medicine organized a launching ceremony to host its libraries' data on NIC cloud on 18 April in New Delhi. The initiative has made the catalogues of the Council's eight libraries attached with its various institutes in the country freely accessible to all globally. It has been done by adopting *e-Granthalaya* – an integrated library management software of National Informatics Centre (NIC).

Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM launching the data of the Council's libraries on NIC cloud on 18 April in New Delhi. Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM is also seen.

After launching the CCRUM's libraries network on NIC cloud, Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, CCRUM termed the networking and automation of the Council's libraries through NIC a new weapon for researchers. Highlighting its importance, he said that a state-of-the-art library is very essential for conducting research. He expressed his gratitude to Dr. Matoria, Technical Director, NIC and his team for their support in developing the catalogues of the Council's libraries through *e-Granthalaya* and their hosting on NIC cloud.

Gracing the occasion, Dr. R.K. Matoria said that library plays very essential role in research and development activities and therefore it should be equipped with advanced technology and state-of-the-art facilities. He urged that other research councils under the Ministry of AYUSH should also adopt *e-Granthalaya* and extend its benefits to the researchers.

Earlier in his introductory remarks, Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM highlighted the importance of library infrastructure in research activities and expressed his satisfaction that the Council has a very rich literary treasure in its libraries. He appreciated the initiative executed by the library and information personnel of the Council.

Appreciating the initiative, Dr. Zakiuddin, Assistant Director (Unani), CCRUM said that this would ease information access and save a lot of time of researchers.

The launching ceremony concluded with vote of thanks proposed by Mr. Mohd. Azhar Khan, Assistant Library and Information Officer, CCRUM.

■

"If we could give every individual the right amount of nourishment and exercise, not too little and not too much, we would have found the safest way to health"

— Hippocrates (c. 460 BC – c. 377 BC)

Technical conference on official language at Patna

The Council's Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Patna organised a day-long Technical Conference on Official Language at Patna on 30 March. The conference aimed at creating awareness about the importance and provisions of the Official Languages Act and encouraging the officials of the institute to use the official language in day-to-day works.

A view of the dais during inaugural session of Technical Conference on Official Language organized by the Regional Research Institute of Unani Medicine, Patna on 30 March.

In his inaugural speech, Dr. S. Sikandar Ali Khan, formerly research officer in-charge of the institute informed about the efforts being made by the institute for promotion and use of the official language in day-to-day business.

Speaking on the occasion, Dr. M. Shahbaz Ahmad, Secretary, Town Official Language Implementation Committee, Patna appreciated the quantum of official works being done at the institute and advised to adopt new techniques and technologies being introduced by the Department of Official Language for propagation and promotion of the official language.

Prof. Allauddin Ahmad, formerly vice-chancellor of Jamia Hamdard, New Delhi underscored the potential of Hindi language in creating awareness about and making the 'Make in India' programme successful. He urged the officials to put in their best efforts for promotion of the official language.

Dr. K.B. Ansari, Deputy Director Incharge, RRIUM, Patna highlighted the role of Unani Medicine in healthcare delivery across the country especially in rural and far-flung areas. He also made a mention of the initiatives being taken by the Council in spreading information about Unani Medicine in Hindi language.

In the first technical session, Dr. Ishtiaque Alam, Dr. Ayesha Praween, Dr. Rajesh, Shri Aslam Siddiqui, Dr. Tasleem Ahmad and Dr. Rizwanullah presented papers related to the role of Unani Medicine in the development of the nation and highlighted the outcomes of research undertaken by the CCRUM.

In the second technical session themed on contribution of Unani Medicine in Swachh Bharat, Swastha Bharat programmes, five papers were presented by Dr. Mohammad Wasim Ahmed, Dr. Mahboob-us-Salam, Dr. Najmus Sehar, Dr. Mumtaz Ahmad and Dr. Hashmat Imam.

The valedictory session was addressed by Dr. S. Manzar Ahsan, formerly deputy director of RRIUM, Patna, Prof. Tawheed Kibria, Government Tibbia College, Patna, Dr. Devanand Prasad Singh, Medical Superintendent, Government Ayurvedic College, Patna and Dr. Rizwanul Haque, Head, Centre for Biological Sciences, Central University of South Bihar, Patna.

Besides, a poetry recitation event was also organized in the evening wherein the guests and officials of the institute recited their Hindi poetry.

• ***Niyaz with input from Wasim Ahmed***

Participation in national workshop on botanical nomenclature

Three of the Council's researchers engaged in survey and cultivation of medicinal plants programme participated in the national workshop on botanical nomenclature organized by St. Joseph's College at Kozhikode, Kerala during 9–11 March. The workshop was sponsored by University Grants Commission (UGC).

The objective of the workshop was (i) to generate awareness about International Code of Nomenclature (ICN); (ii) to impart awareness about provision in the code and correct interpretation of articles; (iii) to generate awareness about significant changes in the rules governing nomenclature; (iv) to provide training in interpretation of legislative and esoteric language of the code; and (v) to provide training to solve nomenclatural problems.

During his inaugural address, Prof. Ramachandra, formerly at the Department of Botany, Bharathiar University, Coimbatore spoke on the importance of the botanical nomenclature as well as the changes in the nomenclature code. Rev. Fr. Anto N. J., Vice Principal, St. Joseph's College delivered the presidential address.

During the technical sessions, different aspects of nomenclature – history, need and recent trends, practical aspects, problems related to effective and valid publication, problems related to author citation – were discussed through lectures. The workshop also had practical exercises.

About 25 participants from different academic and research organizations attended the workshop. The scientific personnel participating from the Central Council for Research in Unani Medicine included Mr. Aminuddin, Research Officer (Botany), CCRUM Headquarters; Mr. R. Murugeswaran, Research Officer (Botany), RRIUM, Chennai; and Dr. Kashif Husain, Research Officer (Botany), CRIUM, Hyderabad.

• ***Aminuddin and R. Murugeswaran***

Health camp in Magh Mela 2016

The Regional Research Centre, Allahabad functioning under the Central Council for Research in Unani Medicine organized a health camp-cum-exhibition during 17 January–15 February at Sangam, Allahabad to cater the healthcare needs of the pilgrims of Magh Mela 2016.

The camp was organized in collaboration with Utthan Centre, an organization for sustainable development and poverty alleviation. It was inaugurated by Prof. R.P. Misra, formerly Vice Chancellor of the Allahabad University. Dr. Deena Nath Tiwari, formerly Deputy Chairman, Planning Commission, Chhattisgarh, Dr. Kaushal Kumar, Secretary, Utthan Centre, Dr. Mohammad Ahmad, formerly Deputy Superintendent, State Unani Medical College, Allahabad and various other dignitaries from Unani fraternity and saints were present during the inaugural function.

As much as 2,632 patients comprising 1936 males and 696 females were treated by the Council's physicians deployed at the camp. Special lectures on various common and chronic diseases were also organized, besides free distribution of literature on intervention of Unani Medicine in prevention of disease and promotion of health. The research activities and achievements of the Council were also exhibited.

• ***Niyaz***

Participation in Arogya Fairs

The Central Council for Research in Unani Medicine recently participated in the various National and State Arogya Fairs / Expos organized by the Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India in collaboration with State Governments and other stakeholders.

These events were organized at Panaji, Goa; Pune, Maharashtra; Ambala, Haryana; Kozhikode, Kerala; Jodhpur, Rajasthan; Rajkot, Gujarat; and Varanasi, U.P. during 27–30 March; 19–22 March; 3-6 March; 31 January–4 February; 28–31 January; 8–11 January; and 12–15 December respectively.

The fairs / expos were organised to propagate Indian systems of medicine, highlight activities and achievements of the AYUSH research councils, provide free-of-cost diagnosis and treatment to the ailing visitors, and impart awareness about health and disease.

During all these fairs, the CCRUM showcased its progress in clinical research, drug standardization, survey and cultivation of medicinal plants, and literary research. It also displayed posters and charts highlighting various concepts of Unani System of Medicine. Besides, some important publications of the Council were put on display. With a view to create awareness about healthy living and intervention of Unani Medicine in curing diseases and promoting health, free-of-cost literature on Unani Medicine was distributed among the visitors. The Council also deployed its physicians to provide free consultation and treatment to the ailing visitors seeking Unani treatment. Lectures on various health issues were also delivered by the Council's researchers.

National Arogya Fair at Panaji

The National Arogya Fair at Panaji, Goa was inaugurated by Union Minister of State (Independent Charge) for AYUSH, Shri Shripad Naik in the presence of Goa Chief Minister Shri Laxmikant Parsekar, Speaker of Goa Legislative Assembly Shri Anant Shet, Deputy Chief Minister Shri Francis D'Souza, Forest Minister Shri Rajendra Arlekar, Science and Technology Minister Ms. Alina Saldanha and Leader of Opposition Shri Pratap Singh Rane.

On the occasion, Shri Naik also released the Yoga Protocol for the second International Day of Yoga falling on 21st June 2016.

In his inaugural address, Shri Naik informed that the Union Government contemplates to open one AYUSH hospital in every district of the country. He further said that the AYUSH Ministry has plans to establish an All India Institute of Yoga and Naturopathy and a unit of each system under AYUSH in Goa in the near future.

A physician of the CCRUM applying cupping procedure on a patient in National Arogya Fair held at Panaji, Goa during 27–30 March.

Shri Shripad Naik, Union Minister of State (I/C) for AYUSH is being welcomed by Dr. Mohammad Raza, Deputy Director Incharge, RRIUM, Mumbai on his visit of the Council's stall in National Arogya Fair held at Pune during 19–22 March.

National Arogya Fair at Pune

The National Arogya Fair at Pune was inaugurated by Shri Shripad Yesso Naik, Hon'ble Minister of State (I/C) for AYUSH, Government of India. Shri Ajit M. Sharan, Secretary (AYUSH), Government of India and officials from Maharashtra Government were also present on the occasion.

In his inaugural address, Shri Shripad Naik said that AYUSH systems have potential to combat various non-communicable and emerging diseases and the Government of India is making efforts to harness that potential.

State Arogya Fair at Ambala

The State Arogya Fair at Ambala was inaugurated by Shri Anil Vij, Minister of Health & Medical Education, and AYUSH, Government of Haryana. In his inaugural address, he announced that an integrated hospital would be started soon in the state which will provide healthcare services of all the traditional medical systems as well as modern medicine. He also said that in the newly constructed hospital in Ambala, one floor will be allotted to the AYUSH systems so that traditional medical expertise could be utilized.

The event was also addressed by Shri Ashok Sangwan, Deputy Commissioner, Ambala, Shri P.K. Mahapatra, Additional Chief Secretary (Health), Dr. Saket Kumar, Director of AYUSH and other senior officials of Haryana.

Arogya Expo at Kozhikode

The Arogya Expo at Kozhikode, Kerala was organized alongside the third edition of Global Ayurveda Festival during 31 January – 4 February 2016.

Dr. Zakiuddin and Dr. Mohammad Sajid attending to patients in State Arogya Fair at Ambala during 3-6 March.

A physician of the Council's Central Research Institute of Unani Medicine, Hyderabad examining a patient at the Arogya Expo held in Kozhikode during 31 January – 4 February.

Addressing Vision Conclave of the Global Ayurveda Festival on 2 February, Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi said, 'The country needs healthcare systems that can lower the burden of non-communicable and lifestyle-related diseases. Ayurveda and Yoga are among the systems that could bring about physical, mental and social well-being'. He further said that the Central Government was focused on tapping the potential of holistic medicine as not only an efficacious system of treatment, but also as a viable economic activity.

Union Minister of State for AYUSH Shri Shripad Yesso Naik said the government was into tie-ups with Asian and European countries to promote Indian systems of medicine globally.

State Arogya Fair at Jodhpur

The State Arogya Fair at Jodhpur, Rajasthan was inaugurated by Shri Rajendra Singh Rathore, Hon'ble Health Minister of Rajasthan. Addressing the inaugural function, he informed that his government was committed to the development of AYUSH systems and their budgetary allocation would get significant hike in the next financial year. He also announced that the posts lying vacant in hospitals would be filled up by AYUSH doctors and 1700 vacancies related to traditional systems of medicine would be created.

State Arogya Fair at Rajkot

The State Arogya Fair at Rajkot was a part of the multi-sectoral show Vibrant Saurashtra Expo and Summit 2016 which had eight dedicated pavilions of different segments including one dedicated to AYUSH systems.

The four-day event saw an immense footfall of over 2,00,000 people. The visitors primarily shopped for a variety of medicines, life giving therapies and herbal products.

The main event was inaugurated by Smt. Anandiben Patel, Hon'ble Chief Minister of Gujarat. Other eminent political figures included Shri Mohan Kundariya, Hon'ble Minister of Agriculture and Farmers Welfare, India and Shri Vijay Rupani, Hon'ble Minister of Transport, Water Supply, Labour and Employment, Gujarat.

National Arogya Fair at Varanasi

The National Arogya Fair at Varanasi was inaugurated by Shri Shripad Naik, Hon'ble Minister of AYUSH, Government of India. Addressing the event Shri Naik said, 'With the establishment of Ministry of AYUSH the Government of India is making all-round efforts to promote and propagate AYUSH systems as a safe, economic and preferred alternative to the modern medicine'.

The event was also addressed by Sh. Anil Ganeriwala, Joint Secretary to Government of India, Ministry of AYUSH and officials from U.P. Government.

• ***Niyaz***

Exploration of medicinal plants in Munnar Forest Division

The Council's researchers from its Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai conducted an ethno-botanical survey in Munnar Forest Division of Idukki district in the state of Kerala during 16 November –10 December 2015. The survey aimed at exploring medicinal plant wealth of the area.

Munnar Forest Division is located in the middle part of Kerala in Idukki district. It consists of four forest ranges namely Mannar, Devikulam, Adimaly and Neriyamangalam. The forest areas, such as Lakshmi and Rajamalai in Munnar Range, ODK, Top Station, Silent Valley, Poopara and Bodimettu in Devikulam Range, Choorakota, Chinnapara and Thumbipara in Adimaly Range and Inchapara, Muduvanpara, Mamalaikandam, Valera and Audit 4 Manium in Neriyamangalam Range are the demarcated areas of rich floristic diversity. Due to altitudinal variations, there are remarkable changes and difference in the climate within the tract. Major area of the division falls in the western slope of the Western Ghats. This area receives rains from both the southwest and northeast monsoons and showers during April–May. The annual average rainfall is about 3000 mm. The regular monsoon commences by June and lasts till the end of August. The climate is more or less temperate in the high altitude areas and the temperature varies between 6° C and 26° C.

During the ethno-botanical survey, the team surveyed about 20 forest areas belonging to 4 forest ranges. As a result, 778 plant specimens belonging to 259 species were collected and documented. Among them, some of the important Unani medicinal plants include *Achyranthues aspera* L. (Chirchita), *Aerva lanata* (L.) Juss. (Bishreributi), *Alpinia galanga* Sw. (Khulanjan), *Alstonia scholaris* (L.) R.Br. (Kashim), *Cajanus cajan* (L.) Mill sp. (Arhar), *Amaranthus spinosus* L. (Chaulai Khardar), *Anacardium occidentale* L. (Kaju), *Artocarpus heterophyllus* Lam. (Kathal), *Asparagus racemosus* Willd. (Satawar), *Bauhinia purpurea* L. (Kachnar), *Calotropis gigantea* (L.) R.Br. ex Ait. (Madar), *Capsicum annuum* L. (Filfil Ahmar), *Cassia occidentalis* L. (Kasondi), *Cassia tora* L. (Panwad), *Catharanthus roseus* (L.) G. Don (Sadabahar), *Clerodenodrum serratum* (L.) Moon. (Bharangi), *Clitoria ternatea* L. (Mazaryoon), *Coccinia grandis* (L.) J. Voigt. (Kanduri), *Curculigo orchioides* Gaertn. (Musli Siyah), *Curcuma longa* L. (Zardchob), *Cuscuta reflexa* Roxb. (Kasoos), *Datura metal* L. (Jauzmasil), *Dodonaea viscose* Jacq. (Jangli Anar), *Erythrina indica* Lam. (Pangra), *Euphorbia hirta* L. (Dudhi Kalan), *Ficus hispida* L.f. (Anjeer Dashti), *Gloriosa superba* L. (Muleem), *Gymnema sylvestre* (L.) R.Br. (Gurmar Buti), *Helicteres isora* L. (Marorphali), *Hemidesmus indicus* (L.) R.Br. (Ushba Hindi), *Hibiscus rosa-sinensis* L. (Gurhal), *Indigofera tinctoria* L. (Neel), *Ipomoca nil*

Solanum virginianum L. (Katai Khurd)

Hibiscus rosa-sinensis L. (Gurhal)

(L.) Roth (Habb al-Neel), *Melia azadirachta* L. (Bakayin), *Mimosa pudica* L. (Lajjalu), *Mirabilis jalapa* L. (Gul-e-Abbas), *Myristica fragrans* Houtt. (Jowzbowa), *Ocimum basilicum* L. (Rehan), *Piper longum* L. (Filfil Daraz), *Piper nigrum* L. (Filfil Siyah), *Plantago ovate* Forsk. (Isapghol), *Plumbago zeylanica* L. (Sheetraj Hindi), *Pterocarpus marsupium* Roxb. (Bijasar), *Ricinus communis* L. (Bedanjeer), *Rubia cordifolia* L. (Majeeth), *Ruta graveolens* L. (Sudaab), *Sida acuta* Burm. f. (Kungoi), *Solanum nigrum* L. (Mako), *Solanum virginianum* L. (Katai Khurd), *Syuzygium aromaticum* (L.) Merr. & Perry (Qaranful), *Terminalia arjuna* (Roxb .ex. DC.) W&A. (Arjun), *Wrightia tinctoria* (Roxb.) R.Br. (Inderjo Sheerin) and *Zingiber officinale* Rosc. (Zanjabeel).

The survey team also visited the tribal populated areas in colonies, such as Elampilacheri, Mamalaikandam and Olavanthodu in Valera forest station, Choorakota, Chinnapara, Thumbipara tribal colonies in Machipulav forest station and Sandoz tribal colony in Munnar Range and collected information on folk medicinal uses of plants which are being used by the tribal and village people for their health care needs. Information on about 40 folk medicinal uses of plants was collected through interviews with the inhabitants. Some of the important folk medicinal uses recorded are: Leaves of *Achyranthus aspera* L. (Nayaruvi) for wound healing; Leaves of *Aerva lanata* (L.) A. Juss. (Serupala) for kidney stone; Latex of *Alstonia scholaris* (L.) Br. (Eazilaipalai) for swelling and pain; Latex of *Alstonia venenata* R.Br. (Palamunpala) for wounds; Leaves of *Amaranthus spinosus* L. (Mullukeerai) for burn injuries; Leaves of *Andrographis alata* Nees. (Nilakangiram) for asthma; Leaves of *Artemisia nilagirica* (CL.) Pamp (Pachaikarpuram) used for muscular pain; Tuberous roots of *Asparagus racemosus* Willd. (Satavari) for stomach ulcers; Leaves of *Biophytum sensitivum* (L.) DC. (Nilapushpam) for inflammation; Latex of *Calotropis gigantea* (L.) R.Br. (Erukan) for wound healing; Leaves of *Cassia alata* L. (Vanthakarai) for ringworm; Leaves of *Cassia occidentalis* L. (Ponthagarai) for scabies; Fruits of *Coccinia grandis* (L.) Voigt. (Kovalam) for diabetes; Leaves

Helicteres isora L. (Marorphali)

Croton tiglium L. (Jamalgota)

of *Costus speciosus* Sm. (Kostum) for menstrual disorders; Fruits of *Croton tiglium* L, (Nervaalam) for skin diseases; Rhizome of *Curcuma aromatic* Salisb. (Kasturi Manjal) for dark patches on face; Rhizome of *Curcuma longa* L. (Manjal) for foot crack; Fruits of *Helicteres isora* L. (Edampurivalampuri) for hair growth and dandruff; Fruits of *Piper nigrum* L. (Milaghu) for dry cough; Roots of *Hemidesmus indicus* (L.) R.Br. (Nannari) for jaundice; Leaves and flowers of *Hibiscus rosa-sinensis* L. (Semparuthi) for hair fall; Seeds and bark of *Hydrocarpus wightiana* Bl. (Maravetti) for rheumatic pain and dandruff; Rhizome of *Kaemfera galanga* L. (Kacholam) for bleeding piles, Leaves of *Mimosa pudica* L. (Thottalvadi) for scabies; Mace of *Myristica fragrans* Houtt. (Jadikali) for stomach pain and flatulence; Leaves of *Ocimum basilicum* Var. Purpuriasens Benth. (Thulasi) for cough; Fruits of *Piper longum* L. (Thipili) for muscular sprain; Seeds of *Plantago ovate* Forsk. (Ispagul) for menstrual disorders; Leaves of *Plumbago zeylanica* L. (Kidivelam) for leprosy and wounds; Leaves of *Ricinus communis* L. (Amanaku) for jaundice; Leaves of *Ruta graveolens* L. (Aruvatham) for rheumatic pain; Whole plant of *Scoparia dulcis* L.(Kaluluki) for viral fever; Leaves of *Sida rhombifolia* L. (Kurunthotti) for inflammation; Flowers and fruits of *Solanum nigrum* L. (Manithakali) for jaundice; Fruits of *Solanum torvum* Sw.(Sundai) for stomach pain; Leaves and fruits of *Syzygium aromaticum* (L.) Merr. & Perry (Kurumbu) for toothache; Leaves of *Catharanthus roseus* (L.) G. Don. (Nithiyakalyani) for ulcers and wounds; Flowers of *Tabernaemontana divericata* (L.) R.Br. ex & Schults (Nandiyavattam) for skin diseases; Leaves of *Tabernaemontana heyneana* Wall. for skin diseases; Leaves of *Wrightia tinctoria* R.Br. (Pala) for hair fall and dandruff; and rhizome of *Zingiber officinale* Rosc. (Ingee) for throat pain.

Researchers from CCRUM's Regional Research Institute of Unani Medicine, Chennai interacting with the locals to record folk claims about medicinal plants.

The survey team was headed by Mr. R. Murugeswaran Research Officer (Botany) and comprised Hakim Hafiz C. Md. Aslam, Research Officer (Unani); Dr. K. Venkatesan, Research Assistant (Botany); Mr. Lakshmi Narayanan, Field Attendant; and Mr. M. Sankar, Driver.

• ***Aminuddin with inputs from R. Murugeswaran***

Retirements

Shri Fayaz Ahmad Bazaz, Assistant Director (Administration), CCRUM headquarters retired on superannuation on 30 April. He had joined the Council as Store Keeper on 26 January 1979. He became Assistant in June 1992 and Office Superintendent / Junior Administrative Officer in July 1994. He was promoted to Administrative Officer in June 2008 and became Assistant Director (Administration) at the headquarters in March 2016.

Shri Mohammad Wasiq Imam, Administrative Officer at the CCRUM headquarters, retired from service on superannuation on 29 February. He had been appointed as LDC on 5 March 1979. During his over 36 year-long service, he was assigned various supervisory roles in administrative, accounts and establishment sections at the headquarters and regional institutes. He was also appointed presenting officer in various departmental enquiries. During his posting at Aligarh, he developed a nursery of medicinal plants having 150 medicinal plants.

Dr. Khaja Bahauddin Ansari, Deputy Director Incharge, Regional Research Institute of Unani Medicine (RRIUM), Patna retired from service on superannuation on 30 April. He had joined the Council as Research Assistant (Unani) at RRIUM, Chennai on 24 April 1981. In 2000, he was promoted to Assistant Research Officer (Unani). He became Research Officer (Unani) in 2005 and Assistant Director (Unani) in 2011. In January 2016, he was assigned the role of Deputy Director Incharge, RRIUM, Patna. For most of the period of his service, he was posted at CRIUM, Hyderabad.

Dr. Musheer Ahmad Khan, Research Officer (Unani), CRIUM, Hyderabad retired on 31 January. He had been appointed Research Assistant (Unani) on 4 June 1986. He became Assistant Research Officer (Unani) on ad hoc basis in February 1996 and on regular basis in June 1996. He was promoted to Research Officer (Unani) in August 2005.

Dr. S. Manzoor Ahmed, Research Officer (Unani), RRIUM, Chennai retired from service on 31 March. He had been appointed Research Assistant (Unani) on ad hoc basis on 11 June 1986, which was regularized in December 1994. He became Assistant Research Officer (Unani) in January 1996 and Research Officer (Unani) in August 2002.

Shri Mohammad Jaffer Hussain Khan, Helper, CRIUM, Hyderabad retired on superannuation on 29 February. He had been appointed on 24 July 1976.

Smt. Archana Guha, Aya, RRIUM, Bhadrak retired on superannuation on 29 February. She had been initially appointed on ad hoc basis on 5 December 1980 and became regular on 18 January 1982.

(Contd. from page 9)

AYUSH will create special platform to take expertise of experts and clinicians for this purpose.

The workshop was jointly inaugurated by the Minister of State (Independent Charge) for AYUSH and Health & Family Welfare, Shri Shripad Yesso Naik, US Ambassador to India, Mr. Richard Verma and Assistant Secretary of Global Affairs at HHS, Ambassador Jimmy Kolker on 3 March.

Addressing the participants, Shri Shripad Naik said, "Globalization of AYUSH is one of the major policy thrusts of our government. The constructive collaboration between India and US in this field is important for incorporating more scientific inputs from both sides in traditional medicines which can help mainstreaming AYUSH systems in patient health care across the globe."

Nearly 175 participants including experts related to traditional systems and modern medicine, biologists, and researchers from India and the US took part in the first of its kind workshop. Prof. Rais-ur-Rahman, Director General, and Dr. Khalid M. Siddiqui, Deputy Director General, CCRUM participated in the event from the Council's side.

• ***Niyaz***

Participation in Vigyan Saksharta Utsav - 2016

The CCRUM participated in Vigyan Saksharta Utsav – 2016 (science literacy festival) held at Jhanjharpur, Madhubani, Bihar during 21–23 February. The event was organized by the Centre for Studies of Popular Sciences in collaboration with the Ministry of AYUSH and other government departments.

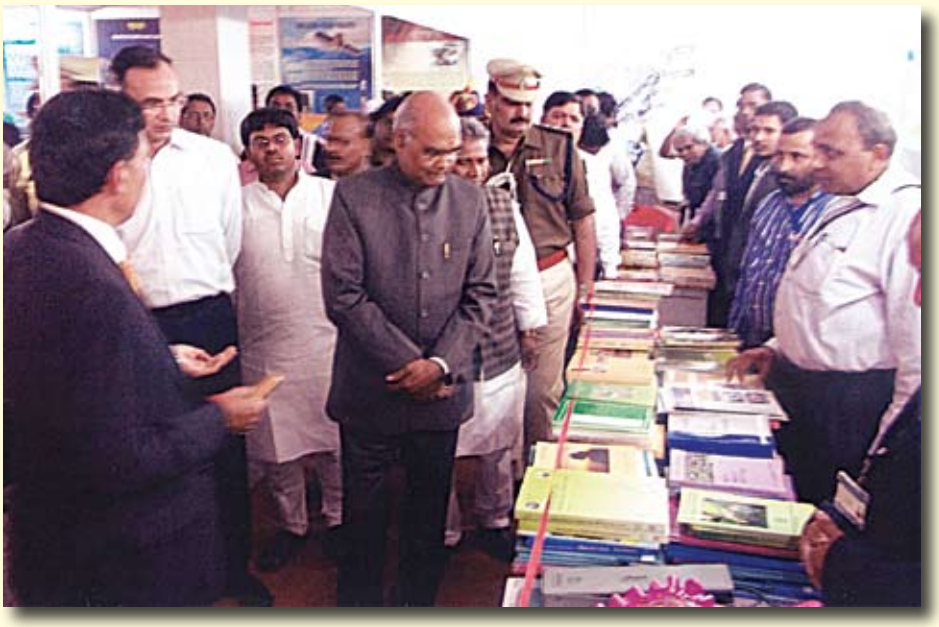

Shri Ram Nath Kovind, Hon'ble Governor of Bihar and Shri Birendra Kumar Chaudhary, Member of Parliament from Jhanjharpur constituency visiting AYUSH stalls at Vigyan Saksharta Utsav - 2016 in Jhanjharpur, Bihar on 21 February.

Inaugurating the event on 21 February, Shri Ram Nath Kovind, Hon'ble Governor of Bihar said that science plays very important role in human life and it has transformed the world into a global village. He further said that science makes us judge things on the basis of reasons and scientific parameters rather than perception.

Speaking on the occasion, Shri Birendra Kumar Chaudhary, Member of Parliament from Jhanjharpur constituency said that science has eased life for the human being through its innovations. Terming 'Make in India' programme a good initiative, he anticipated that it would reduce import volume and create jobs for the people of India.

The CCRUM participated in the event and created awareness about the role of science in human health and interventions of Unani System of Medicine in the maintenance of health and prevention of diseases.

Registration No. 34691/80

About CCRUM Newsletter

The CCRUM Newsletter *is published six times a year. Since January 2014 it is published bilingually in Hindi and English instead of being published in English only. It contains news chiefly about the work of Central Council for Research in Unani Medicine – an autonomous organization of Ministry of Ayurveda, Yoga & Naturopathy, Unani, Siddha and Homoeopathy (AYUSH), Government of India. It is free of charge to individuals as well as organizations interested in the development of Unani Medicine. Material published in the* CCRUM Newsletter *may be reproduced provided credit is given to the* CCRUM Newsletter *and provided such reproduction is not used for commercial purposes.*

Director General & Editor-in-Chief:
Prof. Rais-ur-Rahman

Executive Editor:
Mohammad Niyaz Ahmad

Editorial Board:
Khalid M. Siddiqui
Zakiuddin
Salim Siddiqui
Qamar Uddin

Editorial Office:
CENTRAL COUNCIL FOR
RESEARCH IN UNANI MEDICINE
61-65, Institutional Area, Opp. 'D' Block,
Janakpuri, New Delhi - 110 058 (India)

Telephone : +91-11/28521981, 28525982, 28525983, 28525831, 28525852, 28525862, 28525883, 28525897, 28520501, 28522524
Fax : +91-11/28522965
E-mail: unanimedicine@gmail.com
Website: www.ccrum.net

Printed at: Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area, Phase-I, New Delhi - 110020